CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/3/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. समाज में, परिवार में विविध कुल परंपराओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। हमारे वयोवृद्ध ही इन संस्कृतियों एवं परंपराओं के वाहक होते हैं और इनसे भलीभाँति परिचित होते हैं। वयोवृद्ध परिवार के तरुण सदस्यों को धर्मोन्मुख करते हैं, धार्मिक विधि-विधानों का महत्त्व समझाते हैं। वे भौतिकता और आध्यात्मिकता में संतुलन कायम करना सिखाते हैं। वे ही परिवार में शांति के उपाय, लोक-व्यवहार, रीति-नीति आदि के बारे में सद्गुण विकसित करने में सहायक होते हैं और संस्कारों की नींव रखते हैं। अतः किसी भी कारणवश परिवार के वृद्धजनों का अनादर एवं अपमान नहीं होना चाहिए। तरुणों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाएँ और उनके मान-सम्मान में कोई कमी न आने दें तथा उनकी सुरक्षा कोमलता से करें। भौतिक जीवन-शैली के चलते भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं जिसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा एवं उनका तिरस्कार है। बुजुर्गों को दरकिनार करने से आज परिवारों में कलह-क्लेश, दुख-संताप बढ़ रहा है। भौतिक जीवन-शैली से हमारी आस्थाओं के मूल्य ही बदल गए हैं। मानसिक अशांति बढ़ रही है, रोग-शोक बढ़ रहे हैं। परिवार के तरुण सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार के वृद्धजनों को अपने से अलग न करें एवं उनका यथोचित मान-सम्मान करें। परिवार, समाज की कसौटी पर खरी उतरने वाली धारणाओं, मान्यताओं एवं परम्पराओं को तोड़ने-मोड़ने का या उनकी अनदेखी करने का प्रयास कदापि न करें। संस्कार वहीं अच्छे होंगे जहाँ बुजुर्गों का, माँ-बाप का मान-सम्मान करते हुए उनके द्वारा निर्देशित संस्कृति एवं परंपराओं का ध्यान रखा जाएगा। बुजुर्ग जीवन के मूल्यों को जानने वाले होते हैं। उनका भी कर्तव्य है कि वे परिवार के हर मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप इसलिए न करें कि वे बुजुर्ग हैं। उनको भी हृदय की विशालता बनाए रखने में संकोच नहीं करना चाहिए। [10 अंक]

1(i). वृद्धजनों को संस्कारों और रीतिरिवाजों का वाहक क्यों माना जाता है ? [1 अंक]

(A) क्योंकि वे जीवन-मूल्यों को जानने वाले होते हैं

(B) क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं

(C) क्योंकि वे निष्ठा और लगन से इनका पालन करते हैं

(D) क्योंकि वे जीवन में इनके महत्त्व से परिचित हैं

सही उत्तर: (B) क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश में वृद्धजनों को संस्कृति और परंपराओं का वाहक कहने के बाद बताया गया है कि वे तरुण सदस्यों को धार्मिक विधि-विधान समझाते और संस्कार देते हैं। यहाँ वाहक का अर्थ परंपरा को एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक पहुँचाने वाला है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) जीवन-मूल्यों का ज्ञान और (D) परंपराओं के महत्त्व की जानकारी उनके गुण हैं, पर वाहक होने का केंद्रीय अर्थ नहीं बताते। (C) में निष्ठापूर्वक पालन की बात है, जबकि प्रश्न परंपराओं के हस्तांतरण की भूमिका पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है : क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(ii). संस्कार संबंधी पारिवारिक परंपराओं के समाप्त होने का कारण है : [1 अंक]

(A) संयुक्त परिवारों का विघटन

(B) भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन

(C) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(D) व्यस्त जीवन-शैली

सही उत्तर: (B) भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश में स्पष्ट है कि भौतिक जीवन-शैली के कारण भारतीय संस्कृति के मूल्य बदल रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप बुजुर्ग उपेक्षित होते हैं और उनके द्वारा पहुँचाए जाने वाले संस्कारों तथा पारिवारिक परंपराओं की निरंतरता कमजोर होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) संयुक्त परिवार का विघटन एक संभावित सामाजिक स्थिति है, किंतु यहाँ मूल कारण भौतिकता बताया गया है। (C) पाश्चात्य प्रभाव तथा (D) व्यस्तता को गद्यांश ने इस परिवर्तन का कारण नहीं कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है : भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(iii). वृद्ध व्यक्तियों को परिवार की धुरी क्यों माना जाता है ? [1 अंक]

(A) भौतिक जीवन-शैली के दुष्परिणामों से अवगत कराने के कारण

(B) परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण

(C) जीवन के लंबे अनुभव और ज्ञान के कारण

(D) परंपराओं और संस्कारों का सम्मान करने के कारण

सही उत्तर: (B) परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश कहता है कि वृद्धजन परिवार में शांति के उपाय, लोक-व्यवहार और रीति-नीति के सद्गुण विकसित करते हैं तथा संस्कारों की नींव रखते हैं। धुरी वह आधार है जिसके सहारे परिवार का नैतिक और सांस्कृतिक जीवन चलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) केवल दुष्परिणामों से परिचय कराने तक सीमित है। (C) अनुभव और ज्ञान उनका गुण है, लेकिन प्रश्न उनकी पारिवारिक भूमिका पूछता है। (D) में सम्मान करने की बात है; सही विकल्प परिवार में संस्कार विकसित करने का सक्रिय योगदान बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है : परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(iv). वृद्धजनों का अनादर करने के परिणामों के विषय में कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) सामाजिक व पारिवारिक विघटन

(B) समाज और परिवार में कुव्यवस्था

(C) परिवार में कलह-क्लेश, दुःख-संताप

(D) भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन

सही उत्तर: (D) भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार प्रश्न में असत्य कथन चुनना है। गद्यांश अनादर तथा बुजुर्गों को दरकिनार करने के परिणाम के रूप में परिवार में कलह-क्लेश और दुख-संताप बढ़ने का उल्लेख करता है। सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था के बिगड़ने का संबंध इसी संदर्भ से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) सामाजिक व पारिवारिक विघटन, (B) कुव्यवस्था और (C) कलह-क्लेश उपेक्षा से उत्पन्न संबंधों की अव्यवस्था से जुड़े हैं। (D) का प्रसंग अलग है: लेखक ने भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन सिखाने को वृद्धों का योगदान कहा है, उसे अनादर के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में नहीं गिनाया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है : भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(ix). 'भौतिक जीवन-शैली से हमारी आस्थाओं के मूल्य ही बदल गए हैं।' — पंक्ति का आशय है : [1 अंक]

(A) भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है

(B) भौतिक जीवन-शैली ने हमें धर्म-प्रधान बना दिया है

(C) भौतिक जीवन-शैली ने हमें भाव-प्रधान बना दिया है

(D) भौतिक जीवन-शैली ने हमें कर्म-प्रधान बना दिया है

सही उत्तर: (A) भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश में भौतिक जीवन-शैली के कारण सांस्कृतिक मूल्य बदलने और वृद्धों की उपेक्षा बढ़ने की बात है। आशय यह है कि धन तथा भौतिक सुख-सुविधाओं को संबंधों, आस्थाओं और संस्कारों से अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) धर्म-प्रधान होना कथ्य के विपरीत है, क्योंकि आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा दिखाई गई है। (C) भाव-प्रधान होना भी उचित नहीं, क्योंकि वृद्धों की भावनाओं की उपेक्षा हो रही है। (D) कर्म-प्रधान होने की बात इस पंक्ति में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है : भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(v). बुजुर्गों के प्रति बढ़ती उपेक्षा और तिरस्कार का कारण है : [1 अंक]

(A) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(B) भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव

(C) बुजुर्गों का अनावश्यक हस्तक्षेप

(D) बुजुर्गों में संयम की कमी

सही उत्तर: (B) भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश में कहा गया है कि भौतिक जीवन-शैली के चलते भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदल रहे हैं, जिसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा और उनका तिरस्कार है। इसलिए प्रश्न का कारण इसी स्पष्ट कारण-परिणाम संबंध से निर्धारित होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) पाश्चात्य संस्कृति को इस कथन में कारण नहीं बताया गया। (C) अनावश्यक हस्तक्षेप से बचने की सलाह वृद्धों के लिए है, पर इसे बढ़ती उपेक्षा का मूल कारण नहीं कहा गया। (D) वृद्धों में संयम की कमी का उल्लेख ही नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है : भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(vi). भौतिक सुख-सुविधा के साधनों की वृद्धि ने जीवन को सुगम बनाने के साथ-साथ क्या दुखद स्थितियाँ दी हैं ? [1 अंक]

(A) शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ

(B) व्यस्त जीवन-शैली

(C) धन-दौलत का अंबार

(D) जीवन का एकाकीपन

सही उत्तर: (A) शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश भौतिक जीवन-शैली के संदर्भ में कहता है कि मानसिक अशांति बढ़ रही है और रोग-शोक बढ़ रहे हैं। मानसिक अशांति मानसिक परेशानी को और रोग शारीरिक व्याधियों को व्यक्त करता है। इसलिए दोनों प्रकार की व्याधियों वाला विकल्प पूर्ण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) व्यस्त जीवन-शैली और (D) एकाकीपन को यहाँ इन शब्दों में दुखद परिणाम नहीं बताया गया। (C) धन-दौलत का अंबार रोग-शोक जैसी व्याधि नहीं है और इस प्रश्न के नकारात्मक स्वास्थ्य-संबंधी आशय को व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है : शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(vii). युवाओं को वृद्धों के साथ क्या नहीं करना चाहिए ? [1 अंक]

(A) वृद्धों का अनादर और अपमान

(B) वृद्धों की कोमलता से सुरक्षा

(C) वृद्धों को परिवार का महत्त्वपूर्ण सदस्य मानना

(D) वृद्धों द्वारा निर्देशित परंपराओं का पालन करना

सही उत्तर: (A) वृद्धों का अनादर और अपमान

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश में स्पष्ट निर्देश है कि किसी भी कारण से परिवार के वृद्धजनों का अनादर और अपमान नहीं होना चाहिए। प्रश्न में नहीं करना चाहिए पूछा गया है, इसलिए निषिद्ध व्यवहार पहचानना है, अपेक्षित सद्व्यवहार नहीं।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) कोमलता से सुरक्षा करना युवाओं का कर्तव्य है। (C) उन्हें परिवार का महत्त्वपूर्ण सदस्य मानना उन्हें अलग न करने की भावना से मेल खाता है। (D) उनकी निर्देशित संस्कृति और परंपराओं का ध्यान रखना भी गद्यांश में उचित बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है : वृद्धों का अनादर और अपमान।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(viii). पारिवारिक विघटन को रोकने के लिए गद्यांश में वृद्धों से क्या अपेक्षा की गई है ? [1 अंक]

(A) एकांत में रहकर ईश्वर में ध्यान लगाना

(B) परंपराओं और मान्यताओं को युवाओं पर न थोपना

(C) युवाओं की समस्याओं को सुनना और सुलझाना

(D) पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना

सही उत्तर: (D) पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के कथन और उनका प्रसंग है; बाहरी सामाजिक धारणाएँ नहीं।
- प्रश्न के मुख्य शब्द तथा कारण, परिणाम या निषेध को पहचानकर विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार गद्यांश के अंतिम भाग में लेखक वृद्धों का कर्तव्य भी बताता है। उन्हें केवल बुजुर्ग होने के आधार पर परिवार के हर मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और हृदय की विशालता बनाए रखनी चाहिए। यही पारिवारिक सौहार्द का स्पष्ट सुझाव है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) एकांत में रहकर ध्यान लगाने का निर्देश नहीं है। (B) परंपराएँ युवाओं पर न थोपना एक सामान्य विचार हो सकता है, पर यहाँ अपेक्षा अनावश्यक हस्तक्षेप से बचने की है। (C) समस्याएँ सुनने-सुलझाने का निर्देश इस अंतिम कथन में नहीं दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है : पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में पूछे गए संबंध को गद्यांश की उसी पंक्ति से मिलाएँ; केवल सामान्य रूप से उचित लगने वाला विकल्प न चुनें।

1(x). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन *(A)* : भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं।
कारण *(R)* : भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव सर्वत्र हावी हो रहा है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।
(D) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में पहले दोनों कथनों की सत्यता और फिर उनके बीच कारण-संबंध को जाँचा जाता है।
- गद्यांश का स्पष्ट कथन है कि भौतिक जीवन-शैली के चलते भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता कथन (A) सही है। लेखक भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्यों में परिवर्तन की बात करता है और उसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा तथा तिरस्कार बताता है। इसलिए कथन को ग़लत बताने वाले विकल्प (B) और (C) स्वीकार नहीं किए जा सकते।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण (R) भी सही है। गद्यांश भौतिक जीवन-शैली के बढ़ते प्रभाव को स्वीकार करता है। इसी प्रभाव से आस्थाओं के मूल्य बदलने और परिवारों में मानसिक अशांति बढ़ने की बात कही गई है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव ही सांस्कृतिक मूल्यों के बदलाव का कारण बताया गया है। अत: कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। विकल्प (D) इस सीधे कारण-संबंध को ग़लत बताता है, इसलिए वह उपयुक्त नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश में आए 'के चलते' पद को पहचानिए; यही कारण और परिणाम का सीधा संबंध बताता है।

2(a). वर्षों तक वन में घूम-घूम,
बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर,
पांडव आये कुछ और निखर।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें, आगे क्या होता है।
मैत्री की राह बताने को,
सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,
भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान हस्तिनापुर आये,
पांडव का संदेशा लाये।
'दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे।

दुर्योधन वह भी दे न सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उलटे हरि को बाँधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।' [5 अंक]

2(a)(i). कठिनाइयों और संघर्षों को सहन कर पांडवों में किस प्रकार का बदलाव आया ? [1 अंक]

(A) मनोबल टूट गया
(B) व्यक्तित्व निखर गया
(C) हिम्मत टूट गई
(D) मजबूत हो गए

सही उत्तर: (B) व्यक्तित्व निखर गया

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संघर्ष के प्रभाव को समझने के लिए कवि के सीधे निष्कर्ष को आधार बनाना चाहिए।
- 'पांडव आये कुछ और निखर' व्यक्तित्व के विकास तथा परिष्कार को व्यक्त करता है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानना कवि बताता है कि पांडव वर्षों तक वन में घूमे और उन्होंने धूप, वर्षा तथा अनेक बाधाएँ सहन कीं। इसके बाद आया 'कुछ और निखर' यह स्पष्ट करता है कि कठिनाइयों से उनका व्यक्तित्व अधिक विकसित और परिपक्व हुआ।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण विकल्प (B) कवि की 'निखर' अभिव्यक्ति का सीधा भाव देता है। विकल्प (A) और (C) मनोबल तथा हिम्मत टूटने की बात करते हैं, जबकि पद्यांश में ऐसा पतन नहीं है। विकल्प (D) संघर्ष से दृढ़ता आने का सामान्य संकेत दे सकता है, पर व्यक्तित्व के समग्र निखार को विकल्प (B) अधिक सटीक रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है। कठिनाइयों और संघर्षों से पांडवों का व्यक्तित्व निखर गया।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में भाव का अनुमान लगाने से पहले कवि के परिणामसूचक शब्द 'निखर' का विकल्प से मिलान कीजिए।

2(a)(ii). भगवान हस्तिनापुर क्यों आये थे ? [1 अंक]

(A) युद्ध टालने के लिए
(B) सबकी कुशल-क्षेम जानने
(C) पांडवों का संदेश लेकर
(D) दुर्योधन से बात करने

सही उत्तर: (A) युद्ध टालने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसी घटना का उद्देश्य और उस उद्देश्य को पूरा करने का माध्यम अलग-अलग पहचाने जाते हैं।
- 'मैत्री की राह बताने को' तथा 'भीषण विध्वंस बचाने को' भगवान के आगमन का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: आगमन का उद्देश्य पहचानना भगवान हस्तिनापुर में दुर्योधन को समझाकर मैत्री स्थापित करने आए थे। 'भीषण विध्वंस बचाने को' से स्पष्ट है कि वे युद्ध और उससे होने वाली जनहानि रोकना चाहते थे। पांडवों का समझौते के लिए पाँच ग्राम तक स्वीकार करना भी

इसी शांति-प्रयास को पुष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद करना विकल्प (A) इस मुख्य उद्देश्य, अर्थात युद्ध टालने, को व्यक्त करता है। विकल्प (B) में कुशल-क्षेम पूछने की बात का पाठ में समर्थन नहीं है। विकल्प (C) संदेश लाने और विकल्प (D) दुर्योधन से बात करने का उल्लेख यात्रा के माध्यम या कार्य के रूप में करते हैं; प्रश्न के 'क्यों' का समग्र उत्तर शांति स्थापित करना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। भगवान हस्तिनापुर युद्ध टालने के लिए आए थे।

त्वरित सुझाव: 'क्यों आए' का उत्तर खोजते समय 'को' से समाप्त उद्देश्यसूचक पंक्तियों को पढ़िए और साधन से मुख्य उद्देश्य अलग कीजिए।

2(a)(iii). 'तो दे दो केवल पाँच ग्राम' — पंक्ति में निहित जीवन मूल्य है : [1 अंक]

(A) संतोष

(B) त्याग

(C) प्रेम

(D) करुणा

सही उत्तर: (A) संतोष

हल:

अवधारणा:

- संतोष का अर्थ सीमित साधनों में भी प्रसन्न और संतुष्ट रहना है।
- पंक्ति का मूल्य उसके अगले कथन 'हम वहीं खुशी से खायेंगे' से और स्पष्ट होता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझना पांडव पहले न्याय के रूप में आधा राज्य माँगते हैं। उसमें बाधा होने पर केवल पाँच ग्राम मिलने से ही संतुष्ट रहने की बात कहते हैं। वे शेष धरती दुर्योधन के पास रहने देने और थोड़े स्थान में खुशी से जीवन बिताने के लिए तैयार हैं।

चरण 2: जीवन मूल्य तथा विकल्प चुनना कम मिलने पर भी खुशी से रहने की यह भावना संतोष है, इसलिए विकल्प (A) सटीक है। विकल्प (B) त्याग का आंशिक संकेत दे सकता है, किंतु माँगी गई न्यूनतम प्राप्ति में प्रसन्न रहने का प्रमुख भाव संतोष है। विकल्प (C) प्रेम तथा (D) करुणा इस विशेष पंक्ति के प्रत्यक्ष केंद्रीय मूल्य नहीं हैं; यहाँ किसी के प्रति स्नेह या दया का वर्णन नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। इस पंक्ति में संतोष का जीवन मूल्य निहित है।

त्वरित सुझाव: 'केवल पाँच ग्राम' को 'खुशी से' के साथ पढ़िए; कम में प्रसन्न रहने की भावना संतोष की पहचान है।

2(a)(iv). 'परिजन पर असि न उठायेंगे' — पंक्ति में प्रयुक्त 'असि' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) तीर-धनुष

(B) गदा

(C) तलवार

(D) भाला

सही उत्तर: (C) तलवार

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।

- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान पंक्ति में कवि कहता है कि परिजनों पर असि नहीं उठाएँगे। यहाँ असि उठाना शस्त्र उठाकर आक्रमण करने का संकेत है। संस्कृतनिष्ठ हिंदी में असि शब्द तलवार का पर्याय है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच तीर-धनुष के लिए बाण और धनुष, गदा के लिए गदा तथा भाले के लिए भाला या शक्ति जैसे शब्द आते हैं। ये शस्त्र अवश्य हैं, पर असि के ठीक शब्दार्थ नहीं हैं। इसलिए (A), (B) और (D) उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है — तलवार।

त्वरित सुझाव: शस्त्रों से जुड़े शब्दों में सामान्य अर्थ और सटीक पर्याय का भेद करें; असि का निश्चित अर्थ तलवार है।

2(a)(v). विवेक के मर जाने से क्या होता है ? [1 अंक]

(A) मनुष्य का नाश होता है

(B) मनुष्य भ्रमित हो जाता है

(C) ग़लत कार्य करने की प्रेरणा

(D) असामाजिक कार्य की ओर प्रेरित

सही उत्तर: (A) मनुष्य का नाश होता है

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।
- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान काव्यांश की अंतिम पंक्तियाँ हैं, "जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।" विवेक अच्छे-बुरे और उचित-अनुचित का निर्णय करने की शक्ति है। उसके नष्ट होने पर मनुष्य अपने विनाश की ओर बढ़ता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच भ्रमित होना, गलत काम की प्रेरणा और असामाजिक कार्य की ओर बढ़ना अविवेक के संभावित प्रभाव हो सकते हैं। किंतु प्रश्न का उत्तर कविता में बताए अंतिम परिणाम से लेना है। इसीलिए (B), (C) और (D) की अपेक्षा नाश वाला विकल्प पाठ से सीधे प्रमाणित है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है — मनुष्य का नाश होता है।

त्वरित सुझाव: कारण-परिणाम वाले प्रश्न में कविता की अगली-पिछली पंक्ति साथ पढ़ें और स्पष्ट लिखे परिणाम को चुनें।

अथवा

2(b). 'मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब उसे तोल सकता है धन ?
धरती की तो है क्या बिसात ?
आ जाय अगर बैकुंठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।
सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ,
उस दिन के लिए मचलता हूँ,
यदि चले वज्र दुर्योधन पर,
ले लूँ बढ़कर अपने ऊपर।
कटवा दूँ उसके लिए गला,
चाहिए मुझे क्या और भला ?
सम्राट बनेंगे धर्मराज,
या पाएगा कुरुराज ताज,
लड़ना भर मेरा काम रहा,
दुर्योधन का संग्राम रहा
मुझको न कहीं कुछ पाना है,
केवल ऋण मात्र चुकाना है।
कुरुराज्य चाहता मैं कब हूँ ?
साम्राज्य चाहता मैं कब हूँ ?
क्या नहीं आपने भी जाना ?
मुझको न आज तक पहचाना ?
जीवन का मूल्य समझता हूँ,
धन को मैं धूल समझता हूँ।
धनराशि जोगना लक्ष्य नहीं
साम्राज्य भोगना लक्ष्य नहीं' [5 अंक]

2(b)(i). काव्यांश में 'अनमोल रतन' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) जिसका मूल्य बहुत अधिक हो
(B) जिसका मूल्य आँका न जा सके
(C) जिसका मूल्य नापा न जा सके
(D) जिसका मूल्य जाँचा न जा सके

सही उत्तर: (B) जिसका मूल्य आँका न जा सके

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।
- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान वक्ता मित्रता को "अनमोल रतन" कहता है और पूछता है कि धन उसे कैसे तोल सकता

है। इससे मित्रता का ऐसा मूल्य व्यक्त होता है जिसे धन के पैमाने पर निर्धारित ही नहीं किया जा सकता। अनमोल केवल महँगा होने का नाम नहीं है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में अधिक मूल्य होने की बात है, जबकि अधिक मूल्य भी निर्धारित किया जा सकता है। (C) का नापना और (D) का जाँचना यहाँ मूल्य निर्धारण की सही अभिव्यक्ति नहीं हैं। मूल्य आँकना ही किसी वस्तु का मूल्य तय करना है; इसलिए (B) सटीक अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है — जिसका मूल्य आँका न जा सके।

त्वरित सुझाव: अनमोल के अर्थ के लिए केवल अधिक कीमत न देखें; यह पहचानें कि उसका मूल्य निर्धारित करना संभव है या नहीं।

2(b)(ii). किस पर स्वर्ग न्योछावर करने की बात की गई है ? [1 अंक]

(A) मित्रता पर

(B) धरती पर

(C) धन पर

(D) राज्य पर

सही उत्तर: (A) मित्रता पर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।
- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान वक्ता आरंभ में मित्रता को अनमोल रत्न बताता है। फिर कहता है कि बैकुंठ हाथ आ जाए तो उसे भी कुरुपति के चरणों में न्योछावर कर देगा। बैकुंठ अर्थात स्वर्ग का त्याग मित्र के प्रति उसके गहरे समर्पण का विस्तार है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच धरती को वक्ता स्वर्ग की तुलना में छोटा बताता है, इसलिए (B) त्याग का आधार नहीं है। धन से मित्रता को तौलना असंभव बताया गया है, इसलिए (C) गलत है। राज्य पाने की इच्छा का वक्ता आगे निषेध करता है, इसलिए (D) भी उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है — मित्रता पर।

त्वरित सुझाव: न्योछावर करने के कथन से पहले कही गई मूल भावना देखें; बैकुंठ का त्याग मित्रता के महत्त्व को बढ़ाता है।

2(b)(iii). काव्यांश में वक्ता द्वारा युद्ध में सम्मिलित होने का कारण है : [1 अंक]

(A) साम्राज्य प्राप्ति

(B) कर्तव्यपरायणता

(C) ऋण चुकाना

(D) वीरता-प्रदर्शन

सही उत्तर: (C) ऋण चुकाना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।
- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान वक्ता साफ कहता है, "मुझको न कहीं कुछ पाना है, केवल ऋण मात्र चुकाना है।" वह युद्ध को अपना लाभ पाने का साधन नहीं मानता। दुर्योधन का साथ देकर उसके उपकारों के प्रति कृतज्ञता निभाना ही उसका घोषित उद्देश्य है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) साम्राज्य प्राप्ति का वह स्वयं खंडन करता है। (B) कर्तव्यपरायणता एक व्यापक भाव है, पर प्रश्न में माँगा गया विशेष कारण ऋण चुकाना है। (D) वीरता-प्रदर्शन भी पाठ में उद्देश्य नहीं बताया गया। साहस का वर्णन है, किंतु उसका प्रयोजन मित्र के प्रति समर्पण है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है — ऋण चुकाना।

त्वरित सुझाव: कारण चुनते समय वक्ता के "केवल" जैसे सीमित करने वाले शब्द देखें; वे सबसे सटीक विकल्प की ओर संकेत करते हैं।

2(b)(iv). 'सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ' — पंक्ति में 'स्कंध' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) हथेली

(B) तलवार

(C) कंधा

(D) गला

सही उत्तर: (C) कंधा

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।
- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान "सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ" में सिर और स्कंध का शारीरिक संबंध बताया गया है। स्कंध संस्कृतनिष्ठ शब्द है जिसका अर्थ कंधा होता है। पंक्ति में वक्ता अपना सिर दाँव पर लगाकर मित्र की रक्षा के लिए तत्पर रहने का भाव व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) हथेली हाथ का भाग है और स्कंध का पर्याय नहीं है। (B) तलवार एक शस्त्र है, शरीर का अंग नहीं। (D) गला सिर को धड़ से जोड़ता अवश्य है, किंतु स्कंध का शब्दार्थ गला नहीं, कंधा है। इसलिए प्रसंग और कोशगत अर्थ दोनों (C) का समर्थन करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है — कंधा।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ में केवल पास-पास के शारीरिक अंगों के आधार पर उत्तर न चुनें; स्कंध का निश्चित पर्याय कंधा याद रखें।

2(b)(v). धन को धूल समझने के क्या कारण हो सकते हैं ? [1 अंक]

(A) जीवन का अस्थायित्व

(B) अनुपयोगी होना

(C) महत्त्वहीन होना

(D) दूसरा लक्ष्य होना

सही उत्तर: (D) दूसरा लक्ष्य होना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर काव्यांश के प्रसंग और उसमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर चुना जाता है।
- सभी विकल्पों की तुलना करते समय सामान्य संभावना से अधिक पाठ के प्रत्यक्ष संकेत को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: पाठ के निर्णायक संकेत की पहचान वक्ता जीवन का मूल्य समझने के साथ धन को धूल कहता है। आगे "धनराशि जोगना लक्ष्य नहीं, साम्राज्य भोगना लक्ष्य नहीं" कहकर वह धन और सत्ता को अपने उद्देश्य से बाहर रखता है। उसका वास्तविक लक्ष्य मित्रता निभाना और ऋण चुकाना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) जीवन का अस्थायित्व इस प्रसंग में कारण नहीं बताया गया है। (B) धन को अनुपयोगी कहना भी वक्ता की बात नहीं है। (C) महत्त्वहीन होना उसके कथन का भाव तो दोहराता है, पर उस उपेक्षा का कारण नहीं समझाता। धन से अलग उद्देश्य होना ही उसके व्यवहार का प्रसंगानुकूल कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है — दूसरा लक्ष्य होना।

त्वरित सुझाव: जब प्रश्न कारण पूछे तो कथन का पर्याय न चुनें; धन की उपेक्षा को उसके घोषित लक्ष्य, मित्रता और ऋण चुकाने से जोड़ें।

3(i). संचार का सबसे प्राचीन माध्यम कौन-सा है ? [1 अंक]

(A) रेडियो

(B) दूरदर्शन

(C) सिनेमा

(D) समाचार-पत्र

सही उत्तर: (D) समाचार-पत्र

हल:

अवधारणा:

- माध्यमों का ऐतिहासिक विकास।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें दिए गए माध्यमों में समाचार-पत्र सबसे प्राचीन जनसंचार माध्यम है। मुद्रित समाचार-पत्रों का प्रचलन रेडियो, सिनेमा और दूरदर्शन के विकास से पहले हुआ। प्रश्न में उपलब्ध विकल्पों के बीच प्राचीनता की तुलना करनी है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें रेडियो ध्वनि-प्रसारण का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। सिनेमा चलती छवियों का और दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य प्रसारण का माध्यम है। इन तीनों का विकास समाचार-पत्र के बाद हुआ; इसलिए (A), (B) और (C) सही नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) समाचार-पत्र है।

त्वरित सुझाव: चारों विकल्पों को मुद्रण, ध्वनि और दृश्य-श्रव्य माध्यमों के विकासक्रम में रखकर उत्तर चुनें।

3(ii). दूरदर्शन के लिए ख़बर लिखने की बुनियादी शर्त आप किसे मानते हैं ? [1 अंक]

(A) सरल भाषा में लेखन

(B) दृश्य के साथ लेखन

(C) कम शब्दों में लेखन

(D) ख़बर बताते हुए लेखन

सही उत्तर: (B) दृश्य के साथ लेखन

हल:

अवधारणा:

- दृश्य और समाचार लेखन का संबंध।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। उसकी ख़बर के शब्द पर्दे पर दिखाई देने वाले दृश्यों के साथ मिलकर अर्थ देते हैं। इसलिए उसके लिए ख़बर लिखने की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। लेखन और दृश्य में मेल होना आवश्यक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सरल भाषा (A) और कम शब्दों में लेखन (C) उपयोगी गुण हैं, लेकिन वे दूरदर्शन की विशिष्ट बुनियादी शर्त नहीं बताते। ख़बर बताते हुए लेखन (D) भी प्रस्तुति का गुण है। विकल्प (B) ही दृश्य-आधारित माध्यम की अनिवार्यता को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) दृश्य के साथ लेखन है।

त्वरित सुझाव: दूरदर्शन के प्रश्न में पहले सोचें कि दर्शक सुनने के साथ क्या देखता है; शब्दों का दृश्य से मेल निर्णायक है।

3(iii). खेल जगत से जुड़ी शब्दावली का उदाहरण है : [1 अंक]

(A) स्टॉकिस्टों की चौतरफ़ा बिकवाली

(B) मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके

(C) चाँदी की चमक हुई फीकी

(D) सेंसेक्स आसमान पर

सही उत्तर: (B) मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके

हल:

अवधारणा:

- क्षेत्रविशेष की शब्दावली।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें खेल समाचार में टीमों या देशों के बीच मुकाबले के परिणाम बताए जाते हैं। मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके में पराजय का भाव है। यहाँ दो देशों का उल्लेख उनकी खेल टीमों के संदर्भ में हुआ है; इसलिए यह खेल जगत की भाषा का उदाहरण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें स्टॉकिस्टों की चौतरफ़ा बिकवाली (A) व्यापार और बाजार से जुड़ी है। चाँदी की चमक हुई फीकी (C) चाँदी की कीमत घटने का संकेत है। सेंसेक्स आसमान पर (D) शेयर बाजार की तेजी बताता है। अतः शेष तीनों आर्थिक समाचारों की अभिव्यक्तियाँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके है।

त्वरित सुझाव: शब्दावली पहचानते समय बिकवाली, चाँदी और सेंसेक्स को आर्थिक क्षेत्र से जोड़कर खेल वाला विकल्प अलग करें।

3(iv). समाचार लिखते समय मुख्यतः कितने सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है ? [1 अंक]

(A) तीन

(B) चार

(C) पाँच

(D) छह

सही उत्तर: (D) छह

हल:

अवधारणा:

- समाचार के छह ककार।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें समाचार लिखते समय छह मुख्य प्रश्नों का उत्तर खोजा जाता है: क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे। इन्हें छह ककार कहा जाता है। ये घटना, समय, स्थान, संबंधित व्यक्ति, कारण और घटना की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें तीन (A), चार (B) या पाँच (C) कहने से छह ककारों में से कुछ छूट जाते हैं। पूर्ण समाचार में पाठक को घटना का समग्र परिचय चाहिए; इसलिए इन प्रश्नों की मानक संख्या छह है। सभी छह प्रश्नों को गिनने पर विकल्प (D) की पुष्टि होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) छह है।

त्वरित सुझाव: क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे को क्रम से गिनें; समाचार के छह ककार तुरंत याद आ जाएँगे।

3(v). सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन को पत्रकारिता की भाषा में क्या कहते हैं ? [1 अंक]

(A) आलेख

(B) विशेष लेख

(C) स्तंभ लेख

(D) फ़ीचर

सही उत्तर: (D) फ़ीचर

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर की पहचान।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें फ़ीचर सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ पत्रकारितापरक लेखन है। इसमें किसी विषय को रोचक ढंग से, मानवीय संवेदना और लेखक की विशिष्ट दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया जाता है। प्रश्न में दिए गए गुण फ़ीचर की पहचान कराते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें आलेख (A) किसी विषय का विचारपूर्ण विवेचन करता है। विशेष लेख (B) किसी खास विषय पर केंद्रित लेख होता है। स्तंभ लेख (C) नियमित स्तंभ में प्रकाशित होता है। इनकी तुलना में प्रश्न में उल्लिखित सृजनात्मकता और आत्मनिष्ठता का संयुक्त संकेत फ़ीचर (D) की ओर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) फ़ीचर है।

त्वरित सुझाव: सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ विशेषण एक साथ मिलें तो फ़ीचर की परिभाषा पहचानें।

4. यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ।
अति विषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ।।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा।
बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।
जागा निसिचर देखिअ कैसा।
मानहुँ कालु देह धरि बैसा।।
कुंभकरन बूझा कहु भाई।
काहे तव मुख रहे सुखाई।।
कथा कही सब तेहिं अभिमानी।
जेहि प्रकार सीता हरि आनी।। [5 अंक]

4(i). दसानन के बार-बार सिर धुनने का क्या कारण था ? [1 अंक]

(A) सहयोग नहीं मिलना
(B) संकट से नहीं निकलना
(C) वैद्य द्वारा लक्ष्मण का उपचार करना
(D) लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना

सही उत्तर: (D) लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग और कारण की पहचान।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें इस प्रसंग में लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना रावण की आशा के विपरीत घटना है। वह लक्ष्मण के मूर्च्छित होने से राम-पक्ष की पराजय की आशा कर रहा था। लक्ष्मण के बच जाने का वृत्तांत सुनकर उसे गहरा विषाद हुआ और वह बार-बार सिर धुनने लगा।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें उद्धरण में अति विषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ उसकी निराशा बताता है। सहयोग न मिलना (A) और संकट से न निकलना (B) सामान्य कथन हैं, घटना का विशिष्ट कारण नहीं। वैद्य द्वारा उपचार करना (C) प्रक्रिया है; निर्णायक परिणाम लक्ष्मण का स्वस्थ होना है। अतः (D) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना है।

त्वरित सुझाव: यह वृत्तांत शब्दों को पहले के प्रसंग से जोड़ें और उपचार की प्रक्रिया तथा स्वस्थ होने के परिणाम में भेद करें।

4(ii). अत्यधिक शोक से बेचैन होकर रावण किसके पास गया ? [1 अंक]

(A) मेघनाद

(B) विभीषण

(C) कुंभकरण

(D) मंदोदरी

सही उत्तर: (C) कुंभकरण

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में प्रत्यक्ष सूचना।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें काव्यांश की पंक्ति ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा सीधे बताती है कि व्याकुल रावण कुंभकरण के पास आया। अगली पंक्ति बिबिध जतन करि ताहि जगावा में उसे अनेक उपाय करके जगाने का उल्लेख है। दोनों पंक्तियाँ एक ही पात्र की पुष्टि करती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें मेघनाद (A), विभीषण (B) और मंदोदरी (D) इस घटना में रावण के गंतव्य के रूप में उल्लिखित नहीं हैं। केवल कुंभकरण का नाम इस प्रसंग में आया है। इसलिए अनुमान के स्थान पर काव्यांश की प्रत्यक्ष सूचना के आधार पर (C) चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) कुंभकरण है।

त्वरित सुझाव: किसके पास गया जैसे प्रश्न में क्रिया के ठीक पहले-पिछले पात्र का नाम खोजें; यहाँ कुंभकरन पहिं निर्णायक है।

4(iii). कुंभकरण को असमय जगाने के पीछे रावण की क्या मनोदशा रही होगी ? [1 अंक]

(A) कुंभकरण को स्वयं से श्रेष्ठ मानना

(B) कुंभकरण से दिल की बात करना

(C) कुंभकरण को युद्ध में भेजना

(D) कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा

सही उत्तर: (D) कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा

हल:

अवधारणा:

- व्यवहार से मनोदशा का अनुमान।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें रावण संकट और विषाद में कुंभकरण के पास पहुँचता है तथा उसे अनेक उपाय करके जगाता है। इससे स्पष्ट है कि उसे कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा था। वह मानता था कि उसका शक्तिशाली भाई संकट की स्थिति में उसकी सहायता कर सकता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें स्वयं से श्रेष्ठ मानना (A) काव्यांश से सिद्ध नहीं होता। दिल की बात करना (B) उसके प्रयास की पूरी वजह नहीं समझाता। युद्ध में भेजना (C) संभावित अगला कार्य है, जबकि प्रश्न मनोदशा पूछता है। उस कार्य के पीछे की मानसिक स्थिति शक्ति पर भरोसा (D) है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) कुंभकरण की शक्ति पर भरोसा है।

त्वरित सुझाव: मनोदशा पूछे जाने पर बाहरी कार्य और उसके पीछे की भावना अलग करें; जगाने के पीछे शक्ति पर विश्वास है।

4(iv). 'जागा निसिचर देखिअ कैसा' पंक्ति में 'निसिचर' से किसे संबोधित किया गया है ? [1 अंक]

(A) रावण को

(B) कुंभकरण को

(C) राक्षस को

(D) रात में चलने वाले को

सही उत्तर: (B) कुंभकरण को

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ और संदर्भगत संकेत।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और शेष विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक तथ्य पहचानें निसिचर का सामान्य अर्थ राक्षस अथवा रात में विचरण करने वाला होता है। लेकिन यहाँ प्रश्न किसी पात्र की पहचान पूछता है। पिछली पंक्ति में रावण कुंभकरण को जगाता है; इसलिए जागा निसिचर में जागने वाला निसिचर कुंभकरण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें रावण (A) जगाने वाला है, जागने वाला नहीं। राक्षस (C) शब्द का सामान्य वर्गगत अर्थ बताता है; रात में चलने वाला (D) उसका शाब्दिक अर्थ है। इस पंक्ति में विशिष्ट संदर्भित पात्र पूछे जाने के कारण कुंभकरण (B) ही सही उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) कुंभकरण को है।

त्वरित सुझाव: शब्द का सामान्य अर्थ और प्रसंग में उससे संकेतित पात्र अलग हो सकते हैं; जागा क्रिया को पिछली पंक्ति से जोड़ें।

4(v). कुंभकरण ने रावण से क्या पूछा ? [1 अंक]

(A) सीता हरण का कारण

(B) अपने पास आने का कारण

(C) दुखी होने का कारण

(D) स्वयं को जगाने का कारण

सही उत्तर: (C) दुखी होने का कारण

हल:

अवधारणा:

- कुंभकरण के प्रश्न का आशय रावण के चेहरे की उदासी से समझना है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: पाठ का प्रत्यक्ष संकेत कुंभकरण जागने पर पूछता है, "काहे तव मुख रहे सुखाई। वह रावण का सूखा हुआ, चिंताग्रस्त मुख देखकर उसकी व्याकुलता का कारण जानना चाहता है। यहाँ प्रश्न का केंद्र भाई के मुख की दशा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण सीताहरण का कारण (A) इस प्रश्न का विषय नहीं है। अपने पास आने का कारण (B) और स्वयं को जगाने का कारण (D) भी उद्धृत पंक्ति में नहीं पूछे गए हैं। मुख की उदासी से दुखी होने का कारण स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष कुंभकरण ने रावण से दुखी होने का कारण पूछा। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: "मुख रहे सुखाई को उदासी का संकेत मानकर पूछे गए कारण से जोड़ें।

5. दिन भर के कार्य-भार से छुट्टी पाकर जब मैं कोई लेख समाप्त करने या भाव को छंदबद्ध करने बैठती हूँ, तब छात्रावास की रोशनी बुझ चुकी है, मेरी हिरनी सोना तख्त के पैताने फर्श पर बैठ कर पागुर करना बंद कर देती है, कुत्ता बसंत छोटी मचिया पर पंजों में मुख रख कर आँखें मूँद लेता है और बिल्ली गोधूलि मेरे तकिए पर सिकुड़ कर सो रहती है।

पर मुझे रात की निस्तब्धता में अकेली न छोड़ने के विचार से कोने में दरी के आसन पर बैठकर बिजली की चकाचौंध से आँखें मिच-मिचाती हुई भक्तिन, प्रशांत भाव से जागरण करती है। वह ऊँघती भी नहीं, क्योंकि मेरे सिर उठाते ही उसकी धुँधली दृष्टि मेरी आँखों का अनुसरण करने लगती है। [5 अंक]

5(i). 'भाव को छंदबद्ध करने बैठती हूँ' — से किस प्रकार की ध्वनि निकलती है ? [1 अंक]

(A) डायरी लिखने की

(B) कविता लिखने की

(C) लेख लिखने की

(D) अनुभव लिखने की

सही उत्तर: (B) कविता लिखने की

हल:

अवधारणा:

- भाव को छंदबद्ध करना कविता की रचना की पहचान है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: मुख्य शब्द का अर्थ "छंदबद्ध का अर्थ भावों को छंद, लय और काव्यात्मक रूप में बाँधना है। लेखिका लेख समाप्त करने और भाव को छंदबद्ध करने को दो अलग रचनात्मक क्रियाओं के रूप में बताती हैं। दूसरा प्रयोग पद्य रचना की ओर संकेत करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद डायरी (A), लेख (C) और अनुभव (D) लिखना अपने आप में छंदबद्ध रचना नहीं है। अनुभव कविता का विषय बन सकता है, पर प्रश्न में रचना के रूप का संकेत पूछा गया है। इसीलिए कविता लिखने का अर्थ सबसे सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन से कविता लिखने की ध्वनि निकलती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: "छंदबद्ध शब्द देखते ही रचना के रूप को पहचानें; यहाँ कविता मुख्य संकेत है।

5(ii). 'तब छात्रावास की रोशनी बुझ चुकी है' — पंक्ति का आशय है : [1 अंक]

(A) बिजली गुल होना

(B) रात अधिक होना

(C) अँधेरा होना

(D) छात्रावास में बिजली का न होना

सही उत्तर: (B) रात अधिक होना

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय पूरे प्रसंग में समय के संकेतों से निर्धारित होता है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग का समय पहचानें लेखिका दिन भर के काम के बाद लिखने बैठती हैं। उस समय छात्रावास की रोशनी बुझ चुकी है और हिरनी, कुत्ता तथा बिल्ली भी विश्राम कर रहे हैं। ये सारे संकेत बताते हैं कि रात काफी हो चुकी है।

चरण 2: शाब्दिक अर्थ से आगे समझें बिजली गुल होने (A) अथवा छात्रावास में बिजली न होने (D) की बात नहीं कही गई है; लेखिका के पास बिजली की रोशनी मौजूद है। अँधेरा होना (C) केवल बाहरी स्थिति है, जबकि प्रसंग का मुख्य आशय देर रात होना है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय रात अधिक होना है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: आशय वाले प्रश्न में अगली-पिछली पंक्तियों के समय-संकेत मिलाकर विकल्प चुनें।

5(iii). गद्यांश के अनुसार लेखिका का जानवरों के प्रति किस प्रकार का भाव अभिव्यक्त हो रहा है ? [1 अंक]

(A) प्रेम का

(B) वात्सल्य का

(C) करुणा का

(D) दया का

सही उत्तर: (A) प्रेम का

हल:

अवधारणा:

- लेखिका का पशुओं के साथ सहज आत्मीय संबंध उनके प्रेम को व्यक्त करता है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: आत्मीयता के संकेत देखें लेखिका हिरनी को सोना, कुत्ते को बसंत और बिल्ली को गोधूलि नाम से याद करती हैं। वे उनके सोने के स्थान और विश्राम की मुद्राओं का आत्मीय वर्णन करती हैं। पशु उनके निजी जीवन और कमरे का सहज हिस्सा हैं।

चरण 2: भावों में अंतर करें यह आत्मीय सहवास प्रेम (A) का प्रमाण है। वात्सल्य (B) में संतान के समान पालन का भाव प्रमुख होता है, जो यहाँ प्रत्यक्ष रूप से वर्णित नहीं है। करुणा (C) और दया (D) के लिए पशुओं की पीड़ा या विवशता का प्रसंग चाहिए; यहाँ वे आराम से सो रहे हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में लेखिका का जानवरों के प्रति प्रेम अभिव्यक्त होता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पालतू पशुओं के आत्मीय नाम और उनके सहज निकटवास को प्रेम के प्रमाण के रूप में पढ़ें।

5(iv). रात अधिक हो जाने के बाद भी भक्तिन जागने का प्रयास क्यों करती रहती थी ? [1 अंक]

(A) जानवरों तथा लेखिका की देख-रेख के लिए

(B) रोशनी में नींद नहीं आने से

(C) लेखिका की जरूरत को पूरा करने के लिए

(D) लेखिका को अकेली न छोड़ने के विचार से

सही उत्तर: (D) लेखिका को अकेली न छोड़ने के विचार से

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के व्यवहार का कारण पाठ के प्रत्यक्ष कथन से लेना चाहिए।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: स्पष्ट कारण खोजें गद्यांश में सीधे कहा गया है कि भक्तिन लेखिका को रात की निस्तब्धता में अकेली नहीं छोड़ना चाहती। इसलिए वह कोने में दरी पर बैठी जागती रहती है। लेखिका के सिर उठाते ही उसकी दृष्टि उनका अनुसरण करने लगती है।

चरण 2: शेष कारणों की जाँच करें जानवरों की देखरेख (A) को जागरण का कारण नहीं बताया गया है। रोशनी से आँखें मिचमिचाना नींद न आने (B) का प्रमाण नहीं है। लेखिका की जरूरत पूरी करना (C) सामान्य अनुमान है; पाठ में अकेली न छोड़ने का विचार अधिक

स्पष्ट और सीधा कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन लेखिका को अकेली न छोड़ने के विचार से जागती थी। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: जब गद्यांश में कारण सीधे लिखा हो, सामान्य अनुमान के स्थान पर वही कथन चुनें।

5(v). गद्यांश के अनुसार भक्तिन का लेखिका के प्रति किस प्रकार का भाव अभिव्यक्त होता है ? [1 अंक]

(A) सहयोग का भाव

(B) दास्य भाव

(C) स्वामी-भक्ति

(D) समर्पण का भाव

सही उत्तर: (D) समर्पण का भाव

हल:

अवधारणा:

- स्वेच्छा से निरंतर साथ देना आत्मीय समर्पण का परिचायक है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: व्यवहार से भाव पहचानें भक्तिन दिन के बाद रात में भी लेखिका के साथ बैठती है। तेज रोशनी से आँखों को कष्ट होने पर भी वह ऊँघती नहीं और लेखिका के सिर उठाते ही सजग हो जाती है। उसका उद्देश्य लेखिका को अकेलेपन का अनुभव नहीं होने देना है।

चरण 2: निकट विकल्पों का अंतर सहयोग (A) उसके व्यवहार का एक पहलू है, पर निरंतर सजग आत्मीय साथ का पूरा भाव समर्पण है। दास्य (B) और स्वामी-भक्ति (C) में अधीनता का संकेत प्रमुख है; यहाँ अपनी इच्छा से लेखिका का साथ निभाने और उनकी चिंता करने का भाव उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का लेखिका के प्रति समर्पण का भाव अभिव्यक्त होता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: भक्तिन की सजगता और स्वेच्छा से दिए गए साथ को मिलाकर उसके समर्पण को पहचानें।

6(i). जब यशोधर पंत ने अपने आखिरी फ़ाइल का फीता बाँधा था तब घड़ी में क्या समय हो रहा था ? [1 अंक]

(A) पाँच बजकर चालीस मिनट

(B) पाँच बजकर तीस मिनट

(C) पाँच बजकर पच्चीस मिनट

(D) पाँच बज रहे थे

सही उत्तर: (C) पाँच बजकर पच्चीस मिनट

हल:

अवधारणा:

- कथा के आरंभ में कार्यालय छोड़ने के प्रसंग का निश्चित समय याद करना है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: कथात्मक प्रसंग पहचानें यशोधर पंत अपने कार्यालय में दिन का काम समाप्त करते हुए आखिरी फाइल का फीता बाँधते हैं। इसी समय-संकेत से कहानी का आरंभ होता है। प्रश्न सामान्य दफ्तर बंद होने का समय नहीं, उस खास क्षण में घड़ी का समय पूछता है।

चरण 2: दिए हुए समयों की तुलना करें उस क्षण पाँच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। पाँच बजकर चालीस मिनट (A), पाँच बजकर तीस मिनट (B) और केवल पाँच बजे (D) उस वर्णित क्षण के समय से मेल नहीं खाते। पाँच बजकर पच्चीस मिनट वाला विकल्प ही पाठानुसार सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट हो रहे थे। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: समय-संबंधी तथ्य को आखिरी फाइल का फीता बाँधने वाली आरंभिक घटना से जोड़कर याद रखें।

6(ii). 'जूझ' कहानी के लेखक का मन कहाँ जाने के लिए तड़पता था ? [1 अंक]

(A) सिनेमा जाने

(B) खेलने जाने

(C) खेत में जाने

(D) पाठशाला जाने

सही उत्तर: (D) पाठशाला जाने

हल:

अवधारणा:

- लेखक के संघर्ष का मूल शिक्षा प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है।
- उत्तर चुनते समय पाठ के प्रसंग तथा विकल्पों के सूक्ष्म अंतर को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: लेखक की आकांक्षा समझें लेखक आनंदा का मन पढ़ने और पाठशाला जाने के लिए तड़पता था। खेती के काम में लगे रहने से उसकी पढ़ाई बाधित हो रही थी। शिक्षा पाने की यह आकांक्षा ही उसके संघर्ष और आगे बढ़ने की प्रेरणा का आधार है।

चरण 2: विकल्पों को कथ्य से मिलाएँ सिनेमा जाना (A) और खेलने जाना (B) उसके मुख्य संघर्ष के लक्ष्य नहीं हैं। खेत में जाना (C) भी इच्छित लक्ष्य नहीं, बल्कि वह काम है जिसके कारण पढ़ाई बाधित होती है। पाठशाला जाना ही उसकी तीव्र इच्छा को सही रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: जूझ में खेत के काम और शिक्षा की इच्छा के बीच संघर्ष याद रखकर पाठशाला वाला विकल्प चुनें।

6(iii). 'मुअनजो-दड़ो' और 'हड़प्पा' को सिंधु घाटी सभ्यता के परिपक्व दौर का शहर क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) सबसे पुराने होने से

(B) पूर्ण विकसित होने से

(C) सबसे उत्कृष्ट होने से

(D) बहुत बड़ा होने से

सही उत्तर: (B) पूर्ण विकसित होने से

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान परिपक्व शब्द विकास की पूर्णता का सूचक है। मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा में नियोजित सड़कें, भवन, जलनिकासी और विकसित नगरीय व्यवस्था मिलती है। इसलिए ये नगर सिंधु घाटी सभ्यता की विकसित अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में केवल प्राचीनता बताई गई है, जबकि पुराना होना परिपक्व होना नहीं है। (C) का उत्कृष्टता-बोध और (D) का विशाल आकार भी परिपक्व दौर का सटीक अर्थ नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: पूर्ण विकसित होने से।

त्वरित सुझाव: परिपक्व शब्द दिखे तो विकास की पूर्णता देखें; केवल प्राचीनता या विशाल आकार के आधार पर विकल्प न चुनें।

6(iv). 'मुअनजो-दड़ो' को छोटे-मोटे टीलों पर आबाद क्यों किया गया था ? [1 अंक]

(A) पहाड़ी इलाका होने से
(B) बाढ़ से बचने के लिए
(C) दूर से दिखने के लिए
(D) बड़ा शहर होने से

सही उत्तर: (B) बाढ़ से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान सिंधु नदी के क्षेत्र में बाढ़ का खतरा रहता था। ऊँचे चबूतरों और छोटे-मोटे टीलों पर बसावट करने से पानी का प्रभाव घटता था तथा बस्ती को सुरक्षा मिलती थी। पाठ में ऊँचाई पर नगर बसाने का संबंध इसी व्यावहारिक आवश्यकता से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गलत है क्योंकि टीलों पर बसावट का कारण पहाड़ी क्षेत्र होना नहीं बताया गया है। (C) का दूर से दिखना उद्देश्य नहीं है। (D) में नगर का बड़ा होना उसकी ऊँची बसावट का कारण नहीं बनता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: बाढ़ से बचने के लिए।

त्वरित सुझाव: टीलों की ऊँचाई को बाढ़ के पानी से सुरक्षा से जोड़ें; पहाड़ी क्षेत्र या दूर से दिखने वाले विकल्प छोड़ें।

6(ix). वसंत पाटील का कक्षा में सम्मान क्यों था ? [1 अंक]

(A) वह मॉनीटर था
(B) कक्षा में आगे बैठता था
(C) पढ़ने में होशियार एवं शांत था
(D) मास्टरों का लाड़ला था

सही उत्तर: (C) पढ़ने में होशियार एवं शांत था

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।

- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान वसंत पाटील मन लगाकर पढ़ने वाला, होशियार और शांत स्वभाव का विद्यार्थी था। उसका व्यवस्थित अध्ययन और संयमित व्यवहार उसे दूसरे विद्यार्थियों के बीच आदर दिलाता था। लेखक भी उसकी अध्ययनशीलता से प्रभावित होकर उससे सीखता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का मॉनीटर होना उसका एक दायित्व है, सम्मान का मूल गुणात्मक कारण नहीं। (B) में आगे बैठना मात्र स्थान बताता है। (D) का मास्टरों का लाड़ला होना उसके अध्ययन और शांत व्यवहार जितना उपयुक्त कारण नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: पढ़ने में होशियार एवं शांत था।

त्वरित सुझाव: वसंत के सम्मान का कारण खोजते समय उसके अध्ययन और शांत स्वभाव को देखें; बैठने की जगह को कारण न मानें।

6(v). 'जूझ' कहानी में लेखक सुबह-शाम खेत पर, ढोर चराते आदि समय भी कविताओं में क्यों रमे रहते थे ? [1 अंक]

(A) अपने शिक्षक से प्रभावित होने से

(B) खेत पर अकेले होने से

(C) कविता याद करने के लिए

(D) कविताओं में मन रमने से

सही उत्तर: (D) कविताओं में मन रमने से

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान लेखक का कविता के साथ गहरा आत्मीय संबंध बन गया था। खेत पर काम करते हुए और ढोर चराते समय भी वह कविताएँ गुनगुनाता, उनकी लय में डूबता और नए भावों को अनुभव करता था। कविता उसे आनंद देती थी, इसलिए रोजमर्रा के श्रम में भी उसका मन उसमें रमा रहता था।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में शिक्षक का प्रभाव काव्य-रुचि विकसित करने की पृष्ठभूमि है; किंतु हर समय कविताओं में रमने का प्रत्यक्ष कारण उनका आनंद और लगाव है। (B) का अकेलापन पर्याप्त कारण नहीं। (C) का केवल याद करना इस रचनात्मक तन्मयता को सीमित कर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: कविताओं में मन रमने से।

त्वरित सुझाव: खेत और ढोर चराने में भी कविता में डूबने को उसके काव्य-आनंद से जोड़ें; इसे केवल रटने का अभ्यास न समझें।

6(vi). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना हो सकती है : [1 अंक]

(A) मानवीय मूल्यों का संकट

(B) पीढ़ी का अंतराल

(C) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(D) पारिवारिक असहमति

सही उत्तर: (B) पीढ़ी का अंतराल

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान कहानी में यशोधर बाबू की परंपरागत जीवन-दृष्टि और उनके बच्चों की आधुनिक सोच के बीच अंतर सामने आता है। रहन-सहन, उत्सव, पारिवारिक व्यवहार और सुविधाओं के प्रति दोनों पीढ़ियों की अपेक्षाएँ अलग हैं। यही अंतर कहानी के तनाव और संवेदना का केंद्र है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का मूल्य-संकट, (C) का पाश्चात्य प्रभाव और (D) की पारिवारिक असहमति कहानी के कुछ पक्ष समझा सकते हैं। किंतु ये सभी व्यापक पीढ़ी-अंतर के भीतर आते हैं; इसलिए मूल संवेदना को सबसे समग्र रूप में (B) व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: पीढ़ी का अंतराल।

त्वरित सुझाव: मूल संवेदना के लिए यशोधर बाबू और बच्चों की सोच की तुलना करें; अलग-अलग असहमतियों को पीढ़ी-अंतर में समेटें।

6(vii). 'जब चारों ओर कोल्हू चलने लगते तो बाज़ार में गुड़ की बहुतायत हो जाती और भाव नीचे उतर आते' — पंक्ति से यह पता चलता है कि : [1 अंक]

(A) कोल्हू अधिक चलने पर गुड़ अधिक बनता है

(B) उत्पादन अधिक होने से भाव नीचे जाता है

(C) गुड़ अधिक हो जाने पर माँग कम होती है

(D) भाव पर गुड़ का उत्पादन निर्भर रहता है

सही उत्तर: (B) उत्पादन अधिक होने से भाव नीचे जाता है

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान पंक्ति में दो स्थितियों का सीधा संबंध दिया है: बहुत से कोल्हू चलने पर गुड़ की मात्रा बढ़ती है और बाजार में उसकी बहुतायत होने पर भाव गिर जाते हैं। इसलिए कथन का मुख्य निष्कर्ष अधिक उत्पादन के कारण कीमत का कम होना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) केवल अधिक गुड़ बनने की पहली स्थिति बताता है, कीमत घटने का पूरा संबंध नहीं। (C) में माँग कम होने का दावा है, जबकि पंक्ति ऐसा नहीं कहती। (D) में कारण का क्रम उलट गया है; यहाँ उत्पादन बढ़ने का प्रभाव भाव पर दिखाया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: उत्पादन अधिक होने से भाव नीचे जाता है।

त्वरित सुझाव: पंक्ति को उत्पादन बढ़ना, गुड़ की बहुतायत, भाव गिरना के क्रम में पढ़ें; कारण और परिणाम उलटने वाला विकल्प हटाएँ।

6(viii). 'मुअनजो-दड़ो' के बारे में धारणा है कि 'अपने दौर में वह सिंधु घाटी की सभ्यता का केन्द्र रहा होगा' — पंक्ति में 'केंद्र' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) प्रमुख गाँव

(B) राजधानी

(C) व्यवसायिक-स्थल

(D) शिक्षा-स्थल

सही उत्तर: (B) राजधानी

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान यहाँ केंद्र शब्द सिंधु घाटी की सभ्यता के प्रमुख नगर और उसके केंद्रीय महत्त्व की ओर संकेत करता है। दिए गए विकल्पों में राजधानी इस केंद्रीय स्थिति का सबसे उपयुक्त अर्थ व्यक्त करती है। प्रश्न में व्यक्त धारणा के प्रसंग में यही विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का प्रमुख गाँव नगर की विकसित और केंद्रीय स्थिति नहीं बताता। (C) केवल व्यापार तक और (D) केवल शिक्षा तक अर्थ सीमित करते हैं। पंक्ति में किसी एक विशिष्ट गतिविधि का केंद्र नहीं, संपूर्ण सभ्यता के केंद्र की बात है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: राजधानी।

त्वरित सुझाव: केंद्र का अर्थ चुनते समय पूरी सभ्यता का केंद्रीय नगर देखें; व्यापार या शिक्षा जैसे एक क्षेत्र तक सीमित न करें।

6(x). 'ड्रेसिंग गाउन' पहनते हुए यशोधर बाबू की आँखों में नमी क्यों आ गई थी ? [1 अंक]

(A) भूषण के व्यवहार के कारण

(B) किशनदा के याद आने के कारण

(C) केवल (a)

(D) (a) और (b) दोनों

सही उत्तर: (D) (a) और (b) दोनों

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग में प्रश्न के मुख्य कारण या केंद्रीय भाव की पहचान करनी चाहिए।
- सही विकल्प वही है जो पूरे कथन का अर्थ स्पष्ट करे और प्रसंग से समर्थित हो।

चरण 1: प्रसंग से उत्तर की पहचान भूषण द्वारा दिए गए ड्रेसिंग गाउन में यशोधर बाबू बेटे के स्नेह को अनुभव करते हैं। साथ ही उन्हें किशनदा की याद आती है, जिनसे उनका गहरा आत्मीय संबंध था। वर्तमान में बेटे का अपनापन और अतीत के उस आत्मीय व्यक्ति की स्मृति मिलकर उन्हें भावुक कर देते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) और (B) भावुकता के एक-एक पक्ष को बताते हैं। (C) केवल पहले कारण तक सीमित रहता है। दोनों कारणों को सम्मिलित करने वाला विकल्प (D) अधिक पूर्ण है, क्योंकि आँखों की नमी में बेटे के व्यवहार और किशनदा की याद दोनों की भूमिका है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: भूषण के व्यवहार और किशनदा की याद, दोनों के कारण।

त्वरित सुझाव: ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग में भूषण का स्नेह और किशनदा की स्मृति दोनों गिनें; केवल एक कारण वाला विकल्प अधूरा है।

7(क). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मसूरी जाते समय भूस्खलन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में घटना का केवल विवरण नहीं, बल्कि दृश्य, अनुभूति और उससे निकला बोध भी प्रस्तुत किया जाता है। इस विषय में यात्रा के उत्साह से संकट की आशंका तक का परिवर्तन मुख्य आधार बनेगा।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में संक्षिप्त शीर्षक, घटनाओं का स्वाभाविक क्रम और प्रभावपूर्ण समापन रखें। भाषा संवेदनशील हो तथा अनावश्यक विस्तार से बचें।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति रचनात्मक लेख को उपयुक्त शीर्षक दें। इसके बाद एक संगठित अनुच्छेद में विषय का विकास करें। इसमें पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं दिए जाते। हर वाक्य मुख्य विषय से जुड़ा हो और विचारों के बीच स्पष्ट संबंध बना रहे। आरंभ पाठक की रुचि जगाए और अंतिम वाक्य विषय का सार सामने रखे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना यात्रा आरंभ होने का दृश्य, वर्षा और पहाड़ी मार्ग का वातावरण पहले रखें। फिर भूस्खलन से उत्पन्न बाधा, यात्रियों की प्रतिक्रिया तथा सुरक्षित बचाव का वर्णन करें। अंत में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का बोध जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **मसूरी जाते समय भूस्खलन**

सुबह हम देहरादून से मसूरी के लिए निकले। पहाड़ों पर बादलों की चादर बिछी थी और चीड़ के पेड़ हवा में झूम रहे थे। अचानक तेज वर्षा होने लगी। एक मोड़ पर पत्थरों के गिरने की आवाज आई। चालक ने तुरंत बस रोक दी। सामने मिट्टी और चट्टानों का ढेर सड़क पर फैल गया था। क्षण भर में हमारा उत्साह भय में बदल गया। सभी यात्री सुरक्षित स्थान पर एकत्र हुए। एक बुजुर्ग महिला को सहारा देकर हमने सड़क से दूर पहुँचाया। कुछ देर बाद बचाव दल आया और रास्ता खोलने लगा। प्रतीक्षा के उन क्षणों में समझ आया कि पहाड़ केवल सुंदर दृश्य नहीं, संवेदनशील जीवन हैं। उनकी रक्षा किए बिना पर्यटन का आनंद अधूरा है।

चरण 4: निष्कर्ष यात्रा का दृश्य, अचानक आया संकट, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार और प्रकृति संरक्षण का संदेश लेख को पूर्ण बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय में पहले यात्रा का उत्साह दिखाएँ, फिर भूस्खलन का तनाव और अंत में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का बोध लिखें।

7(ख). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

ऑनलाइन शॉपिंग : समय की माँग [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ी सुविधाओं को जीवन के अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। ऑनलाइन खरीदारी पर लिखते समय समय की बचत और सुविधा प्रमुख आधार होंगे।
- लगभग 120 शब्दों में शीर्षक, आकर्षक आरंभ, सुव्यवस्थित विचार और सार्थक निष्कर्ष दें। लाभ बताते हुए विवेकपूर्ण खरीदारी का संकेत लेख को संतुलित बनाता है।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति रचनात्मक लेख को उपयुक्त शीर्षक दें। इसके बाद एक संगठित अनुच्छेद में विषय का विकास करें। इसमें पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं दिए जाते। हर वाक्य मुख्य विषय से जुड़ा हो और विचारों के बीच स्पष्ट संबंध बना रहे। आरंभ पाठक की रुचि जगाए और अंतिम वाक्य विषय का सार सामने रखे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना व्यस्त दिनचर्या से आरंभ करें। घर बैठे खरीदारी, वस्तुओं की तुलना और छोटे नगरों तक पहुँच जैसे लाभ जोड़ें। फिर दिखावटी छूट और अनावश्यक खर्च के प्रति सावधानी बताते हुए विषय के अनुरूप निष्कर्ष दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **ऑनलाइन शॉपिंग : समय की माँग**

आज की व्यस्त दिनचर्या में बाजार जाने के लिए समय निकालना कठिन होता जा रहा है। ऐसे में ऑनलाइन शॉपिंग सुविधा का नया

द्वार खोलती है। घर बैठे मोबाइल पर कपड़े, पुस्तकें और घरेलू सामान मँगाए जा सकते हैं। अलग दुकानों की कीमतों और खरीदारों की प्रतिक्रियाओं की तुलना करना भी आसान है। छोटे शहरों के लोगों को अनेक वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं। फिर भी चमकती तस्वीरें और भारी छूट हमेशा लाभदायक नहीं होतीं। जरूरत से अधिक खरीदारी जेब और पर्यावरण दोनों पर बोझ डालती है। इसलिए विश्वसनीय विक्रेता चुनना और वापसी की शर्तें पढ़ना जरूरी है। ऑनलाइन शॉपिंग सचमुच समय की माँग है, बशर्ते सुविधा के साथ समझदारी भी हमारी खरीदारी की साथी बने।

चरण 4: निष्कर्ष ऑनलाइन शॉपिंग आधुनिक जीवन में समय और श्रम बचाती है; विवेकपूर्ण चयन तथा सावधानी के साथ इसका उपयोग करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल सुविधाएँ न गिनाएँ; खरीदारी का एक ठोस लाभ और अनावश्यक खर्च से बचने की सलाह जोड़कर लेख पूरा करें।

7(ग). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

परीक्षा के समय पढ़ने का आनंद [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ी अनुभूति, कल्पना और विचारों को मौलिक तथा प्रवाहपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ परीक्षा के दबाव के बीच अध्ययन से मिलने वाले आनंद को उभारना है।
- लेख का आरंभ किसी सजीव दृश्य से, मध्य विषय के विस्तार से और अंत सार्थक अनुभूति से करें। लगभग 120 शब्दों के लेख में शीर्षक के बाद विचारों की एकता बनाए रखें।

चरण 1: विषय और दृष्टिकोण निश्चित करें परीक्षा आते ही पढ़ाई केवल अंकों की दौड़ लग सकती है, किंतु उत्तर खोजने और कठिन बात समझने में भी आनंद मिलता है। लेख का केंद्रीय भाव यही रखें कि एकाग्र अध्ययन भय को आत्मविश्वास में बदलता है। विषय को केवल परीक्षा की तैयारी की सलाहों तक सीमित न करें; विद्यार्थी की मन:स्थिति और सीखने की प्रसन्नता भी दिखाएँ।

चरण 2: लेख की रूपरेखा बनाएँ शुरुआत मेज पर रखी पुस्तकों और परीक्षा के वातावरण से की जा सकती है। फिर किसी कठिन अध्याय के समझ में आने की खुशी, मित्र के साथ विचार साझा करने का अनुभव और नियमित विराम का उल्लेख करें। अंत में ज्ञान को स्थायी उपलब्धि बताएँ। छोटे वाक्य और सहज बिंब लेख को प्रभावी बनाएँगे।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख लिखें **परीक्षा के समय पढ़ने का आनंद**

मेज पर खुली पुस्तक, पास रखी घड़ी और खिड़की से आती ठंडी हवा। परीक्षा निकट है, पर आज पढ़ाई बोझ नहीं लग रही। कल तक उलझाने वाला अध्याय अचानक समझ में आया तो लगा जैसे कोई बंद दरवाजा खुल गया हो। हर सही उत्तर अपने भीतर एक छोटा उत्सव है। मित्र से चर्चा करते हुए नई बात सूझती है और मन का डर धीरे-धीरे आत्मविश्वास में बदल जाता है। बीच में थोड़ी देर टहलकर लौटता हूँ तो शब्द फिर ताजे लगने लगते हैं। अब पुस्तक के पन्ने केवल संभावित प्रश्न नहीं, नई दुनिया के रास्ते हैं। अंक अपनी जगह महत्त्वपूर्ण हैं, किंतु समझने की यह खुशी उनसे भी बड़ी है। परीक्षा समाप्त होगी, पर सीखने का यह आनंद साथ रहेगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में परीक्षा की घबराहट से समझने के आनंद तक की यात्रा दिखाई गई है। सजीव आरंभ, व्यक्तिगत अनुभव और आशावादी अंत विषय को एक सूत्र में बाँधते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर कठिन अध्याय समझने की एक छोटी घटना चुनें और उसी से अध्ययन का आनंद दिखाएँ; लेख को समय-सारणी की सूची न बनाएँ।

7(घ). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

लालच बुरी बलाय [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख किसी विचार को अनुभव, घटना या कल्पना के माध्यम से प्रभावी बनाता है। इस विषय में आवश्यकता से अधिक पाने की इच्छा और उसके दुष्परिणाम को केंद्र में रखना है।
- शीर्षक के बाद सुसंगत आरंभ, घटना का विकास और अर्थपूर्ण अंत दें। लगभग 120 शब्दों के लेख में उपदेशों की लंबी सूची के स्थान पर छोटा प्रसंग अधिक प्रभावी रहता है।

चरण 1: विषय का आशय स्पष्ट करें लालच मनुष्य को अपने पास उपलब्ध सुख से असंतुष्ट कर देता है। अधिक पाने की अंधी इच्छा में वह विवेक खो बैठता है और कभी अपनी मूल पूँजी भी गँवा देता है। इस भाव को किसी साधारण जीवन-प्रसंग से स्पष्ट करें। परिश्रम से आगे बढ़ने की स्वस्थ इच्छा को लालच न बताएँ; यहाँ बिना सोचे लाभ पाने की अधीरता समस्या है।

चरण 2: प्रसंग और समापन की योजना बनाएँ एक ऐसे व्यक्ति का प्रसंग चुनें जो तुरंत अधिक धन पाने के प्रलोभन में अपनी बचत लगा देता है। उसकी आरंभिक प्रसन्नता, चेतावनी की उपेक्षा और बाद की हानि क्रम से दिखाएँ। अंत में संतोष, विवेक और परिश्रम का महत्त्व उभरे। घटना काल्पनिक हो सकती है, लेकिन उसके कारण और परिणाम विश्वसनीय होने चाहिए।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख प्रस्तुत करें **लालच बुरी बलाय**

रामू की छोटी दुकान अच्छी चलती थी। परिवार सुखी था, फिर भी उसे रातोंरात अमीर बनने की चाह सताती रहती। एक दिन किसी अनजान व्यक्ति ने महीने भर में धन दोगुना करने का वादा किया। पत्नी ने समझाया, पर लाभ का सपना उसके विवेक पर छा गया। उसने दुकान की सारी बचत उस व्यक्ति को सौंप दी। महीना बीता तो न धन लौटा, न वह आदमी मिला। अब दुकान में नया सामान भरने के लिए भी पैसे नहीं थे। रामू खाली डिब्बों को देखकर अपनी भूल समझ गया। उसने फिर मेहनत शुरू की और धीरे-धीरे स्थिति सँभाली। इस बार कमाई थोड़ी थी, पर नींद शांत थी। उसे समझ आ गया कि संतोष सुख देता है और अंधा लालच कमाया हुआ सुख भी छीन लेता है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रसंग से स्पष्ट होता है कि विवेकहीन लालच व्यक्ति को आर्थिक हानि और मानसिक अशांति देता है। संतोष तथा ईमानदार परिश्रम स्थायी सुख का आधार हैं।

त्वरित सुझाव: लालच पर लिखते समय प्रलोभन, गलत निर्णय और परिणाम की कड़ी स्पष्ट रखें; अंत में उसी घटना से निकली सीख दें।

8(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय हमें किस प्रकार की सावधानियाँ रखनी चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी के वर्णनात्मक कथ्य को मंच पर अभिनीत होने योग्य दृश्य और संवाद में बदला जाता है।
- मूल कथ्य, पात्रों की विशेषताएँ तथा नाटक की मंचीय सीमाएँ रूपांतरण के प्रमुख आधार हैं।

चरण 1: कथ्य और मंचीय आवश्यकताएँ पहचानना कहानी को पहले घटनाओं और दृश्यों में बाँटें। प्रमुख संघर्ष, चरमबिंदु और अंत सुरक्षित रखें। अनावश्यक घटनाएँ हटाते समय मूल उद्देश्य न बदलें। समय, स्थान, उपलब्ध मंच तथा कलाकारों की संख्या के अनुसार दृश्य चुनें। कहानी में लेखक जो बताता है, उसे पात्रों की क्रिया, हावभाव अथवा संवाद से व्यक्त करें।

चरण 2: संवाद और निर्देश तैयार करना पात्रों के स्वभाव तथा परिस्थिति के अनुकूल छोटे, सहज और प्रभावी संवाद लिखें। लंबा वर्णन ज्यों का त्यों रखने से अभिनय बोझिल होता है। पात्रों के प्रवेश-प्रस्थान, प्रकाश, ध्वनि और आवश्यक गतिविधियों के स्पष्ट रंगनिर्देश दें। दृश्यों का क्रम ऐसा रहे कि कथा का प्रवाह और नाटकीय प्रभाव बना रहे।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी के नाट्य रूपांतरण में मूल कथ्य, उद्देश्य और पात्रों का स्वभाव सुरक्षित रखना चाहिए। वर्णन को अभिनययोग्य

दृश्यों और छोटे, स्वाभाविक संवादों में बदलना आवश्यक है। घटनाओं का चयन मंच, समय और साधनों के अनुसार करें। अनावश्यक विस्तार हटाएँ तथा प्रवेश-प्रस्थान, प्रकाश और ध्वनि के स्पष्ट रंगनिर्देश दें। दृश्यों का क्रम और नाटकीय प्रभाव भी बनाए रखें।

त्वरित सुझाव: उत्तर बनाते समय कथ्य, संवाद और मंचीय व्यवस्था के लिए एक-एक वाक्य अवश्य रखें।

8(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

रेडियो पर किस तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं ? 19वीं शताब्दी में इसकी लोकप्रियता का क्या कारण था ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य जनसंचार माध्यम है; इसमें शब्द, स्वर, संगीत और ध्वनि के माध्यम से सामग्री प्रस्तुत की जाती है।
- रेडियो की तकनीकी शुरुआत और जनमाध्यम के रूप में उसकी व्यापक लोकप्रियता अलग ऐतिहासिक अवस्थाएँ हैं।

चरण 1: कार्यक्रमों के प्रकार बताना रेडियो पर समाचार-बुलेटिन, वार्ताएँ, साक्षात्कार, परिचर्चाएँ, नाटक, संगीत तथा मनोरंजन के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, खेल और मौसम से संबंधित कार्यक्रम भी श्रोताओं को सूचना और उपयोगी जानकारी देते हैं। बच्चों तथा अन्य विशिष्ट श्रोता-वर्गों के लिए भी अलग कार्यक्रम बनाए जाते हैं।

चरण 2: लोकप्रियता के कारण और कालक्रम स्पष्ट करना प्रश्न में दिए काल-संकेत को सावधानी से समझना आवश्यक है। 19वीं शताब्दी के अंत में बेतार संचार के प्रयोग हुए; नियमित रेडियो प्रसारण और उसकी व्यापक जनप्रियता 20वीं शताब्दी में विकसित हुई। इसकी लोकप्रियता का कारण कम खर्च, दूर तक पहुँच और सुनने के लिए साक्षरता की अनिवार्यता न होना था। श्रोता अन्य कार्य करते हुए भी कार्यक्रम सुन सकते हैं। इसलिए इसे 19वीं शताब्दी का व्यापक जनप्रिय प्रसारण-माध्यम कहना ऐतिहासिक रूप से सही नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो पर समाचार, संगीत, नाटक, वार्ताएँ, साक्षात्कार तथा शिक्षा, कृषि और खेल संबंधी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इसकी लोकप्रियता के कारण सस्ती पहुँच, निरक्षर व्यक्तियों के लिए उपयोगिता और काम करते हुए सुनने की सुविधा हैं। कालक्रम की दृष्टि से 19वीं शताब्दी के अंत में बेतार संचार के प्रयोग हुए; व्यापक प्रसारण और लोकप्रियता 20वीं शताब्दी में विकसित हुई।

त्वरित सुझाव: कार्यक्रमों के उदाहरण और लोकप्रियता के कारण अलग लिखें; तकनीकी शुरुआत तथा व्यापक प्रसारण का काल एक न मानें।

8(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

लेखन से आप क्या समझते हैं ? लेखन के लिए अभ्यास क्यों आवश्यक है और कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखन विचारों, अनुभवों और भावनाओं की भाषा में सुव्यवस्थित लिखित अभिव्यक्ति है।
- अच्छे लेखन के लिए निरंतर अभ्यास, सूक्ष्म अवलोकन, अध्ययन और अपने लिखे का संशोधन आवश्यक है।

चरण 1: लेखन का अर्थ और अभ्यास की आवश्यकता समझना मन में आए विचारों को केवल लिख देना पर्याप्त नहीं है। उन्हें विषय और पाठक के अनुरूप स्पष्ट, क्रमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण भाषा देना लेखन है। नियमित अभ्यास से विचारों की अस्पष्टता दूर होती है, शब्दों का सही चुनाव आता है तथा वाक्य-रचना सुधरती है। इससे लेखक का आत्मविश्वास और अपनी बात कहने का कौशल बढ़ता है।

चरण 2: अभ्यास की व्यावहारिक विधि बताना प्रतिदिन किसी देखी घटना, अनुभव या नए विषय पर थोड़ा लिखें। अच्छे लेखकों को पढ़कर भाषा और प्रस्तुति की विशेषताएँ समझें। लिखने के बाद रचना दोबारा पढ़ें और अनावश्यक शब्द, दोहराव, व्याकरण तथा क्रम की त्रुटियाँ सुधारें। दूसरों की सार्थक प्रतिक्रिया के आधार पर पुनर्लेखन करें। निरंतर अवलोकन और संशोधन से अभिव्यक्ति अधिक सहज तथा मौलिक बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखन अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं की सुव्यवस्थित लिखित अभिव्यक्ति है। अभ्यास से भाषा, विचारों की स्पष्टता, क्रमबद्धता और अभिव्यक्ति-कौशल निखरते हैं। इसके लिए नियमित पढ़ना, आसपास की घटनाओं का अवलोकन करना और प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर लिखना चाहिए। अपने लेखन को दोबारा पढ़कर त्रुटियाँ सुधारना तथा उपयोगी सुझावों के आधार पर पुनर्लेखन करना भी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को अर्थ, आवश्यकता और अभ्यास की विधि के क्रम में लिखें; संशोधन का उल्लेख अवश्य करें।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :
पत्रकारीय विशेषज्ञता का क्या अर्थ है ? यह कैसे हासिल की जा सकती है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय विशेषज्ञता का संबंध किसी विशेष विषय की गहरी जानकारी और उसके समाचारों की प्रामाणिक व्याख्या करने की क्षमता से है।
- विशेषज्ञ पत्रकार अपने क्षेत्र की शब्दावली, पृष्ठभूमि, स्रोतों और नवीन परिवर्तनों को समझकर सामान्य पाठक तक सहज भाषा में पहुँचाता है।

चरण 1: अर्थ और उत्तर की रूपरेखा यह प्रश्न विशेषज्ञता का अर्थ और उसे प्राप्त करने के उपाय, दोनों पूछता है। इसलिए पहले विषयगत गहन समझ स्पष्ट करें और फिर अध्ययन, प्रशिक्षण, व्यावहारिक अनुभव तथा विश्वसनीय स्रोतों से संपर्क का उल्लेख करें। केवल लंबे समय तक समाचार लिखना विशेषज्ञता की पूरी परिभाषा नहीं है। विशेषज्ञता का उद्देश्य कठिन शब्दों का प्रदर्शन करना नहीं, बल्कि घटनाओं का संदर्भ समझाना है। पत्रकार को प्राप्त सूचना की जाँच करके उसकी विश्वसनीयता सुनिश्चित करनी चाहिए और नए घटनाक्रम के अनुसार अपना ज्ञान अद्यतन रखना चाहिए।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ किसी विशेष क्षेत्र, जैसे अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल या न्यायपालिका की गहरी समझ तथा उससे जुड़ी घटनाओं का सही विश्लेषण करने की क्षमता है। इसे नियमित अध्ययन, विषय संबंधी पुस्तकों और प्रामाणिक दस्तावेजों के पठन, विशेषज्ञों से बातचीत तथा निरंतर रिपोर्टिंग के अनुभव से हासिल किया जा सकता है। संबंधित क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली, इतिहास और नवीन घटनाक्रम की जानकारी भी आवश्यक है। पत्रकार को विश्वसनीय स्रोत विकसित करने तथा जटिल जानकारी को सरल भाषा में प्रस्तुत करने का अभ्यास करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारीय विशेषज्ञता विषय के गहन ज्ञान और उसके प्रामाणिक, सरल विश्लेषण का मेल है; निरंतर अध्ययन एवं रिपोर्टिंग इसका आधार हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विशेषज्ञता का अर्थ लिखने के बाद अध्ययन, अनुभव, विशेषज्ञों से संवाद और विश्वसनीय स्रोतों का क्रम से उल्लेख करें।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :
पत्रकारीय लेखन से आप क्या समझते हैं ? पत्रकारों के प्रकारों के बारे में विस्तार से लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन समाचार माध्यमों के लिए तथ्यों, घटनाओं और मुद्दों को जनहित में प्रामाणिक तथा स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना है।
- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके संस्थान से संबंध और कार्य की प्रकृति के आधार पर पूर्णकालिक, अंशकालिक तथा स्वतंत्र पत्रकार के रूप में किया जाता है।

चरण 1: अर्थ और वर्गीकरण की रूपरेखा पहले पत्रकारीय लेखन का उद्देश्य स्पष्ट करना चाहिए। इसके बाद तीनों प्रकारों में अंतर उनके

रोजगार संबंध से बताना चाहिए। पूर्णकालिक पत्रकार नियमित कर्मचारी होता है; अंशकालिक पत्रकार सीमित क्षेत्र या अवसरों के लिए सामग्री भेजता है; स्वतंत्र पत्रकार विभिन्न संस्थानों को सामग्री देता है। समाचार, लेख, टिप्पणी और साक्षात्कार इसके अलग-अलग रूप हो सकते हैं। तथ्य की शुद्धता, स्रोत की विश्वसनीयता और भाषा की स्पष्टता सभी प्रकार के पत्रकारों के लिए आवश्यक हैं। वर्गीकरण का आधार विषय नहीं, संस्थान के साथ रोजगार संबंध है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर पत्रकारीय लेखन जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, विचार और घटनाओं को तथ्यपूर्ण, स्पष्ट तथा जनहितकारी ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य है। पत्रकार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है और निर्धारित दायित्व निभाता है। अंशकालिक पत्रकार किसी क्षेत्र या स्थान से समय-समय पर समाचार भेजता है तथा प्रायः सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक पाता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्थान का नियमित कर्मचारी नहीं होता; वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखता और पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन तथ्यपूर्ण जनसंचार है। संस्थान से कार्य संबंध के अनुसार पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र होते हैं।

त्वरित सुझाव: पत्रकारों के प्रकार बताते समय केवल नाम न गिनाएँ; प्रत्येक का संस्थान से संबंध और पारिश्रमिक का आधार भी स्पष्ट करें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

टी.वी. पर प्रसारित होने वाली सूचनाएँ किन-किन चरणों से होकर गुजरती हैं ? किन्हीं चार के बारे में विस्तार से लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन में समाचार शब्द, दृश्य और ध्वनि के मेल से प्रस्तुत होता है। घटना की जानकारी और दृश्य मिलने के साथ उसकी प्रस्तुति अधिक विस्तृत होती जाती है।
- फ्लैश, ड्राई एंकर, फोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर-बाइट, लाइव और एंकर-पैकेज समाचार प्रस्तुति के प्रमुख रूप हैं।

चरण 1: चार चरणों का आशय समझना फ्लैश में तत्काल मिली बड़ी सूचना कुछ शब्दों में प्रसारित होती है। ड्राई एंकर में समाचार-वाचक जानकारी पढ़ता है और साथ में घटना के दृश्य नहीं चलते। फोन-इन में घटनास्थल का संवाददाता फोन पर ताजा स्थिति बताता है। एंकर-विजुअल में एंकर के समाचार पढ़ने के साथ घटना के दृश्य दिखाए जाते हैं। हर समाचार के लिए ये सभी चरण एक निश्चित क्रम में होना अनिवार्य नहीं है; सामग्री की उपलब्धता के अनुसार प्रस्तुति बढ़ती है। फोन-इन की पहचान संवाददाता की आवाज से है, जबकि एंकर-विजुअल में दृश्य सूचना को प्रमाणिक और बोधगम्य बनाते हैं।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर टी.वी. समाचार की प्रस्तुति के चार प्रमुख चरण हैं। फ्लैश में बड़ी घटना की सूचना तत्काल थोड़े शब्दों में दी जाती है। ड्राई एंकर में समाचार-वाचक घटना का विवरण पढ़ता है, पर उसके दृश्य उपलब्ध नहीं होते। फोन-इन में संवाददाता घटनास्थल से फोन द्वारा ताजा जानकारी और प्रत्यक्ष स्थिति बताता है। एंकर-विजुअल में समाचार-वाचक के विवरण के साथ घटना से संबंधित दृश्य भी दिखाए जाते हैं। इस प्रकार दर्शक समाचार सुनने के साथ उसे देखकर अधिक स्पष्टता से समझ पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष चार प्रमुख चरण फ्लैश, ड्राई एंकर, फोन-इन और एंकर-विजुअल हैं; इनमें सूचना क्रमशः संक्षिप्त खबर, वाचन, संवाददाता की जानकारी और दृश्य सहित प्रस्तुत होती है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक चरण का नाम लिखकर यह स्पष्ट करें कि उसमें केवल सूचना, एंकर का वाचन, फोन पर रिपोर्ट या दृश्य में से क्या शामिल है।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'आत्मपरिचय' कविता में कवि को यह संसार अपूर्ण क्यों लगता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में कवि का निजी संसार प्रेम, संवेदना और अपने मन के गीतों से बना है।
- कवि और बाहरी जगत की प्राथमिकताओं में अंतर है; सांसारिक उपलब्धियाँ आत्मीय प्रेम की कमी को पूरा नहीं करतीं।

चरण 1: कवि की अपेक्षा और जगत का अंतर कवि के लिए प्रेम और मानवीय संवेदना जीवन को सार्थक करते हैं। वह अपने अंतर के अनुभवों, सुख-दुःख और स्नेह को महत्व देता है। बाहरी संसार उसके भाव-जगत से मेल नहीं खाता। कविता में कवि का अपना राग और जगत से उसकी दूरी साथ-साथ आते हैं। इसलिए संसार की अपूर्णता को वस्तुओं की कमी के अर्थ में नहीं, कवि की प्रेमपूर्ण जीवन-दृष्टि की अतृप्ति के अर्थ में समझना चाहिए। कवि सांसारिक बंधनों के बीच रहते हुए भी अपनी भावनात्मक स्वतंत्रता बनाए रखता है। उसके लिए जगत से तालमेल की शर्त अपनी संवेदना खो देना नहीं है; यही उसकी अलग जीवन-दृष्टि का आधार है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर कवि के लिए जीवन की पूर्णता प्रेम, आत्मीयता और संवेदनशील संबंधों में है। बाहरी संसार उसके मन के अनुरूप नहीं है; वहाँ उसके भावों और प्रेम को समुचित स्थान नहीं मिलता। इसीलिए सांसारिक सुख-साधन भी उसकी आंतरिक प्यास नहीं बुझाते। अपने निजी राग और स्नेह को महत्व देने वाले कवि को प्रेम तथा आत्मीयता से रहित यह संसार अपूर्ण लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि की प्रेम और आत्मीयता की आकांक्षा संसार में पूरी नहीं होती; इसी भावात्मक अभाव के कारण उसे संसार अपूर्ण लगता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को कवि की प्रेमप्रधान दृष्टि से जोड़ें; संसार की अपूर्णता को केवल धन या भौतिक साधनों की कमी न बताएँ।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
कविता और फूलों के बीच की समानता और अंतर को 'कविता के बहाने' कविता के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण कविता की सृजनात्मक शक्ति को फूल के खिलने के माध्यम से स्पष्ट करते हैं।
- फूल का सौंदर्य और कविता का आनंद समान हैं, किंतु कविता का प्रभाव फूल की भौतिक सीमाओं से आगे जाता है।

चरण 1: समानता और अंतर अलग करना फूल और कविता दोनों खिलते हैं: फूल का खिलना प्रकृति का सौंदर्य है और कविता का खिलना भावों तथा कल्पना का प्रस्फुटन है। दोनों मन को आनंद देते हैं। अंतर उनके प्रभाव की सीमा में है। फूल का जीवन और सुगंध सीमित हैं; वह अंततः मुरझा जाता है। कविता का रस अलग-अलग समय और स्थान के पाठकों तक पहुँचता है। कवि का बिना मुरझाए महकने का भाव इसी व्यापक और दीर्घजीवी प्रभाव को व्यक्त करता है। फूल यहाँ कविता को समझाने वाला उपमान है, उसकी अंतिम सीमा नहीं। कविता बाहरी सौंदर्य तक रुकने के बजाय मनुष्य के भीतर नए अर्थ जगाती है और हर नए पाठक के साथ अपना प्रभाव फिर रचती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर फूल और कविता दोनों खिलकर आनंद तथा सौंदर्य का अनुभव कराते हैं। फूल की महक की तरह कविता की भाव-सुगंध भी मन को सुख देती है। अंतर यह है कि फूल का खिलना सीमित है और वह कुछ समय बाद मुरझा जाता है। कविता बिना मुरझाए महकती रहती है; उसका आनंद स्थान और समय की सीमाएँ लाँघकर पाठकों तक पहुँचता है।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों की समानता आनंद और सौंदर्य देने में है; अंतर यह है कि फूल क्षणभंगुर और सीमित है, जबकि कविता की भाव-सुगंध व्यापक और दीर्घजीवी है।

त्वरित सुझाव: पहले खिलने और आनंद की समानता लिखें, फिर फूल के मुरझाने के विपरीत कविता की स्थायी महक से अंतर स्पष्ट करें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
कृषक अधीर होकर बादल को क्यों बुलाता है ? 'बादल राग' कविता के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल वर्षा देने वाली प्राकृतिक शक्ति के साथ शोषण से मुक्ति लाने वाली क्रांति का भी प्रतीक है।
- किसान की पुकार को उसकी आर्थिक दुर्दशा तथा बादल से जुड़ी नई जीवन-आशा के आधार पर समझना चाहिए।

चरण 1: कृषक की दुर्दशा समझिए कवि कृषक को जीर्ण शरीर और क्षीण बाहुओं वाला बताता है। लगातार परिश्रम के बाद भी वह सुखी नहीं है, क्योंकि उसके जीवन का सार शोषक वर्ग ने चूस लिया है। उसकी कृश देह केवल व्यक्तिगत कमजोरी नहीं, बल्कि लंबे सामाजिक-आर्थिक शोषण का परिणाम है। इसलिए उसकी अधीरता जीवन बचाने की बेचैनी है। किसान का कष्ट समझे बिना उसकी पुकार का सामाजिक आशय पूरा नहीं खुलता।

चरण 2: बादल से जुड़ी आशा स्पष्ट कीजिए खेती के लिए वर्षा आवश्यक है। बादल बरसेंगे तो सूखी धरती में फसल उगेगी और किसान को अन्न तथा आजीविका मिलेगी। साथ ही कविता में बादल की गर्जना क्रांति का आह्वान है; किसान उससे अन्यायपूर्ण व्यवस्था के बदलने और शोषण से छुटकारा मिलने की आशा करता है। उसे बादल में अपना पक्ष लेने वाली शक्ति दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कृषक का शरीर निरंतर श्रम और शोषण से जर्जर हो गया है। उसके जीवन का सार शोषकों ने चूस लिया है। वह बादल को अधीर होकर बुलाता है, क्योंकि वर्षा से फसल और आजीविका की आशा है। बादल क्रांति का भी प्रतीक है। इसलिए किसान उसकी गर्जना में शोषण से मुक्ति और नए जीवन का संदेश सुनता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किसान की दयनीय दशा के साथ बादल के दोनों अर्थ जोड़िए: वर्षा से जीवन और क्रांति से शोषण-मुक्ति।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
तुलसी ने अपने पद 'धूत कहौ, अवधूत कहौ ...' में अपने स्वाभिमान को कैसे व्यक्त किया है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की स्वाभिमानी भक्ति में लोकनिंदा से निर्भयता और अपने आराध्य के प्रति अटूट निष्ठा साथ-साथ व्यक्त होती हैं।
- पद में जातिगत पहचान तथा सामाजिक प्रतिष्ठा की अपेक्षा आत्मसम्मान और स्वतंत्र जीवन को महत्त्व दिया गया है।

चरण 1: लोकनिंदा के प्रति दृष्टि पहचानिए तुलसी कहते हैं कि लोग उन्हें धूर्त, अवधूत या किसी भी जाति का कहें, उन्हें इसकी चिंता नहीं है। वे लोगों की स्वीकृति पाने के लिए अपने आचरण या विश्वास को बदलना नहीं चाहते। इससे अपमानजनक संबोधनों के सामने उनका निर्भय आत्मसम्मान प्रकट होता है।

चरण 2: आत्मनिर्भरता का आधार समझिए वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं। किसी से वैवाहिक संबंध या सामाजिक लाभ पाने की अपेक्षा नहीं रखते। माँगकर खाने और मस्जिद में सोने की बात उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं और सामाजिक बंधनों से स्वतंत्रता को दर्शाती है। भक्ति उन्हें प्रतिष्ठा की चिंता से मुक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी लोकनिंदा और जातिगत आक्षेपों की परवाह नहीं करते। वे राम के सेवक हैं और किसी से सामाजिक लाभ की अपेक्षा नहीं रखते। माँगकर खाना तथा मस्जिद में सोना स्वीकार करके वे अपनी स्वतंत्रता, निर्भयता और स्वाभिमान व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: धूर्त या अवधूत कहे जाने पर निर्भयता, रामभक्ति तथा न्यूनतम आवश्यकताओं में स्वतंत्र जीवन—इन बिंदुओं से स्वाभिमान समझाइए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने कागज के पन्ने को खेत की तरह क्यों कहा है ? समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने कृषि की प्रक्रिया के रूपक द्वारा काव्य-सृजन को समझाया है।
- पन्ना खेत, भाव का अंकुरण सृजन की शुरुआत और कविता की रसधारा उस सृजन की फलदायी फसल है।

चरण 1: खेत और पन्ने की समानता समझिए जिस प्रकार खेत में बीज बोकर फसल उगाई जाती है, उसी प्रकार कागज पर अनुभव और कल्पना से कविता रची जाती है। किसी भाव के बीज पड़ने पर सृजन शुरू होता है। कल्पना उसे रूप देती है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। इस प्रकार पन्ना रचनात्मक उत्पादन की भूमि बन जाता है।

चरण 2: कविता की फसल का वैशिष्ट्य बताइए कृषि की फसल कटने पर समाप्त हो जाती है, पर कविता का रस पाठकों को बार-बार आनंद देता है। पाठक जब भी उसे पढ़ते हैं, नया भावानुभव प्राप्त करते हैं। इस अक्षय आनंद के कारण साधारण-सा पन्ना कवि के लिए सृजन का महत्त्वपूर्ण खेत बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कागज का पन्ना खेत की तरह कविता के जन्म की भूमि है। उसमें भाव का बीज पड़ता है, कल्पना से उसका विकास होता है और शब्द अंकुरित होते हैं। तैयार कविता ऐसी रसपूर्ण फसल है जिसका आनंद पाठक बार-बार प्राप्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: पन्ना-खेत, भाव-बीज, शब्द-अंकुर और कविता-फसल का क्रम याद रखिए; अंतिम बात में रस की अक्षयता अवश्य जोड़िए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'उषा' कविता में प्रकृति में होने वाला परिवर्तन मानवीय जीवन-चित्र बन कर किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर की कविता में प्रातःकालीन आकाश का बदलता रंग घरेलू वस्तुओं और मानवीय क्रियाओं के बिंबों से मूर्त होता है।
- बिंबों का क्रम अंधकार से उजाले की ओर परिवर्तन को अनुभवगम्य और आत्मीय बनाता है।

चरण 1: घरेलू जीवन के बिंब पहचानिए नीले आकाश को राख से लीपे हुए गीले चौके के रूप में देखा गया है। उषा की लालिमा काली सिल पर घिसे लाल केसर जैसी लगती है। लाल खड़िया से मली हुई स्लेट का बिंब भी आता है। चौका लीपना, मसाला पीसना और स्लेट पर लिखना परिचित मानवीय गतिविधियों की याद दिलाते हैं।

चरण 2: प्रकृति और मानव जीवन का संबंध बताइए नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह का बिंब प्रातःकाल के सौंदर्य को मानवीय रूप देता है। बदलते रंगों और गीलेपन से प्रकृति निष्प्राण दृश्य नहीं रहती, बल्कि घरेलू जीवन और मानवीय सौंदर्य की आत्मीय छवि बन जाती है। सूर्योदय होने पर यह मोहक जादू टूट जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष उषा का बदलता आकाश राख से लीपे गीले चौके, केसर लगी काली सिल और लाल खड़िया से मली स्लेट के बिंबों में दिखाई देता है। नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह का चित्र भी प्रकृति को घरेलू तथा मानवीय जीवन से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण का केवल नाम न लिखें; चौका, सिल और स्लेट के बिंबों को संबंधित घरेलू गतिविधियों से जोड़कर समझाएँ।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ में बाज़ार को 'शैतान का जाल' क्यों कहा गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र कुमार का पाठ आवश्यकता पर आधारित खरीद और अनियंत्रित उपभोक्ता-आकर्षण का अंतर स्पष्ट करता है।
- बाज़ार का जादू तभी प्रभावी होता है जब व्यक्ति अपनी वास्तविक जरूरत पहचाने बिना वस्तुओं की चमक-दमक से प्रभावित होता है।

चरण 1: आकर्षण के जाल को पहचानिए बाज़ार में सजी विविध वस्तुएँ, उनकी सुंदर प्रस्तुति और चकाचौंध मनुष्य को लुभाती हैं। जिसके मन में अपनी जरूरत स्पष्ट नहीं होती, वह वस्तु की उपयोगिता के बजाय उसके आकर्षण के अधीन हो जाता है। उसे अनेक अनावश्यक चीजें भी जरूरी लगने लगती हैं। यह आकर्षण उसकी स्वतंत्र निर्णय-शक्ति को कमजोर करता है। वस्तु चुनने का आधार जरूरत के स्थान पर लोभ बन जाता है।

चरण 2: परिणाम और बचाव समझाइए आकर्षण में फँसा व्यक्ति जरूरत से अधिक वस्तुएँ खरीदता है। घर आकर उसे खर्च और अनुपयोगी सामान का बोझ समझ में आता है। इस तरह बाज़ार तृष्णा बढ़ाकर संतोष छीन लेता है। अपनी आवश्यकता और क्रय-शक्ति का विवेक बनाए रखने पर व्यक्ति इस जाल से बच सकता है; पाठ हर खरीद का विरोध नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार अपनी चमक-दमक और सजी वस्तुओं से व्यक्ति को मोह लेता है। अपनी जरूरत न पहचानने वाला मनुष्य उसके जादू में फँसकर अनावश्यक चीजें खरीद लेता है। इससे धन व्यर्थ जाता है, तृष्णा बढ़ती है और संतोष नष्ट होता है। विवेक को बाँधकर इच्छाओं का दास बना देने के कारण बाज़ार को शैतान का जाल कहा गया है।

त्वरित सुझाव: कारणों का क्रम रखें: आकर्षण, जरूरत का विस्मरण, अनावश्यक खरीद और असंतोष; बचाव के लिए आवश्यकता का विवेक जोड़ें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इंदर सेना" — इस कथन में लेखक ने पानी के लिए इंदर सेना के निकलने को अंतिम उपाय क्यों कहा है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के संस्मरण में अनावृष्टि से पीड़ित समाज की विवशता तथा वर्षा के लिए प्रचलित लोकविश्वास का चित्रण है।
- इंदर सेना बच्चों की टोली है, जिसका कीचड़ में लथपथ होकर मेघों से पानी माँगना वर्षा के देवता को प्रसन्न करने का लोकाचार है।

चरण 1: अनावृष्टि का प्रसंग वर्षा न होने पर धरती सूखती है, खेतों की उपज नष्ट होने लगती है और मनुष्य तथा पशु-पक्षी पानी के लिए व्याकुल हो उठते हैं। लंबे समय तक राहत न मिलने से लोगों की सामान्य आशाएँ क्षीण हो जाती हैं। कथन में इसी सामूहिक संकट की पृष्ठभूमि समझनी चाहिए।

चरण 2: अंतिम उपाय कहने का कारण इंदर सेना का निकलना वैज्ञानिक ढंग से पानी जुटाने की योजना नहीं, संकटग्रस्त जनसमुदाय की आस्था का सहारा है। वर्षा बुलाने के दूसरे जतन और प्रार्थनाएँ निष्फल होने पर लोग बच्चों के निष्कपट आह्वान से इंद्र को प्रसन्न करने की आशा करते हैं। इसीलिए लेखक इसे अंतिम उपाय कहते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर वर्षा न होने से खेत सूख जाते, जीव-जंतु व्याकुल होते और चारों ओर पानी का संकट छा जाता था। वर्षा के लिए किए गए जतन निष्फल हो जाने पर लोग इंद्र को प्रसन्न करने की अंतिम आशा बच्चों की इंदर सेना से रखते थे। उसका कीचड़ में लथपथ होकर पानी माँगना जनसमुदाय की विवशता और लोकविश्वास का सहारा था।

चरण 4: निष्कर्ष इंदर सेना संकट के समय वर्षा पाने की बची हुई लोकविश्वासपूर्ण आशा थी; इसी अर्थ में उसका निकलना अंतिम उपाय है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले अनावृष्टि का संकट, फिर अन्य जतन निष्फल होना और अंत में बच्चों के आह्वान से जुड़ी लोक-आस्था लिखिए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'पहलवान की ढोलक' पाठ में आई पंक्ति "अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी" — के द्वारा लेखक ने किस स्थिति की ओर संकेत किया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में महामारी से त्रस्त ग्रामीण जीवन तथा भय और मृत्यु के बीच ढोलक से मिलने वाले साहस का चित्रण है।
- रात को आँसू बहाते हुए बताना मानवीकरण है; प्राकृतिक वातावरण के माध्यम से लोगों का सामूहिक दुख व्यक्त होता है।

चरण 1: कहानी की स्थिति पहचानना गाँव में मलेरिया और हैजे का प्रकोप है। अभावग्रस्त, दुर्बल ग्रामीण बीमारी के सामने असहाय हैं और घरों में मृत्यु का शोक छाया है। दिन की चहल-पहल के स्थान पर रात का सन्नाटा भय और निराशा को और गहरा कर देता है। पंक्ति इसी त्रासद वातावरण का संकेत देती है।

चरण 2: पंक्ति का आशय स्पष्ट करना अँधेरी रात का चुपचाप रोना वास्तविक मानवीय क्रिया नहीं है। लेखक ने रात को संवेदनशील मनुष्य का रूप देकर यह जताया है कि गाँव की पीड़ा इतनी व्यापक है कि पूरा परिवेश शोकग्रस्त जान पड़ता है। इसके विपरीत पहलवान की ढोलक की आवाज लोगों में जीवित रहने का उत्साह जगाती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति से लेखक ने महामारी से उजड़े गाँव की भयावह और शोकपूर्ण स्थिति का संकेत किया है। मलेरिया और हैजे से लोग मर रहे थे; गरीबी, भूख और असहायता ने जीवन निराश बना दिया था। रात के सन्नाटे में यह दुख और गहरा लगता था। रात का मानवीकरण करके लेखक ने ऐसा वातावरण रचा है, मानो प्रकृति भी ग्रामीणों के दुख में रो रही हो।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति महामारी, अभाव और मृत्यु से त्रस्त गाँव की सामूहिक वेदना तथा गहरी निराशा व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: आँसू का अर्थ केवल ओस न लिखें; महामारी से उत्पन्न शोक और रात के मानवीकरण को जोड़कर आशय स्पष्ट करें।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

जेठ महीने में शिरीष अन्य पेड़ों से अलग कैसे है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के माध्यम से कठिन परिस्थितियों में भी सरसता और जीवन्तता बनाए रखने का संदेश दिया है।
- जेठ की भीषण गर्मी में अन्य वृक्षों की मुरझाहट तथा शिरीष की पुष्पित अवस्था का विरोध प्रश्न का केंद्र है।

चरण 1: तुलना का आधार जेठ में धूप और लू का प्रकोप होता है। ऐसी गर्मी में अन्य पेड़-पौधे निढाल और सूखे दिखाई देते हैं। शिरीष उसी समय कोमल फूलों से भरा रहता है। यह उसकी सहनशीलता और मस्ती का परिचय है। उत्तर में इसी एक मौसम में दिखाई देने वाली अलग-अलग दशाओं की तुलना करनी है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जेठ की झुलसाती धूप और लू में जहाँ अन्य पेड़-पौधे मुरझाकर निढाल हो जाते हैं, वहीं शिरीष कोमल फूलों से लदा रहता है। वह भीषण गर्मी में भी हरा-भरा और सरस रहकर प्रतिकूल परिस्थितियों में सहज उल्लास बनाए रखने का परिचय देता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष जेठ की कठोर गर्मी में भी पुष्पित और सरस रहता है; यही उसे अन्य पेड़ों से अलग बनाता है।

त्वरित सुझाव: जेठ की गर्मी का सामान्य वर्णन बढ़ाने के बजाय अन्य पेड़ों की निढालता और शिरीष की फूलों भरी सरसता का अंतर लिखें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ में 'जातिवाद' का पोषक किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर जाति-प्रथा के समर्थन में दिए जाने वाले श्रम-विभाजन के तर्क की समीक्षा करते हैं।
- जातिवाद के पोषक वे समर्थक हैं जो जन्माधारित व्यवस्था को उपयोगी श्रम-विभाजन बताकर बनाए रखना चाहते हैं।

चरण 1: समर्थकों का तर्क जातिवाद के समर्थक आधुनिक समाज में कार्यकुशलता के लिए श्रम-विभाजन की आवश्यकता का हवाला देते हैं। वे जाति-प्रथा को भी उसी श्रम-विभाजन का दूसरा रूप मानते हैं और इसी आधार पर उसका समर्थन करते हैं। लेखक का अपना मत इस समर्थन से अलग है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जाति-प्रथा का समर्थन करने वाले लोगों को जातिवाद का पोषक कहा गया है। वे कार्यकुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक बताते हुए जाति-प्रथा को उसका दूसरा रूप मानते हैं। इस तर्क से वे जन्माधारित पेशागत व्यवस्था को उचित ठहराकर जातिवाद बनाए रखना चाहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जातिवाद के पोषक जाति-प्रथा के समर्थक हैं; वे उसे कार्यकुशलता के लिए आवश्यक श्रम-विभाजन बताकर उचित ठहराते हैं।

त्वरित सुझाव: किसे और क्यों दोनों का उत्तर दें; समर्थकों का तर्क लेखक की स्वीकृति की तरह प्रस्तुत न करें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'कवि और कविता के संबंध में भक्तिन का ज्ञान बढ़ा है; आदर-भाव नहीं।' — महादेवी जी के इस कथन का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन की सहज बुद्धि, व्यावहारिक दृष्टि और अपनी मान्यताओं पर अडिग रहने का स्वभाव उभरता है।
- किसी विषय के बारे में जानकारी बढ़ने और उसके प्रति श्रद्धा बढ़ने में अंतर है; कथन इसी अंतर को व्यक्त करता है।

चरण 1: ज्ञान और आदर का अंतर लेखिका के संपर्क में रहकर भक्तिन कवियों तथा कविता के विषय में पहले से अधिक जानने लगी थी। किंतु उसने साहित्यिक प्रसिद्धि को किसी व्यक्ति के सम्मान की स्वतः कसौटी नहीं माना। उसका आकलन व्यावहारिक संबंधों से जुड़ा रहा।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखिका के साथ रहते हुए भक्तिन कवियों और कविता के बारे में बहुत कुछ जान गई थी, किंतु उनके प्रति विशेष श्रद्धा नहीं बढ़ी। वह साहित्यिक बंधुओं का सम्मान उनकी कवि-प्रतिष्ठा से नहीं, महादेवी जी के प्रति उनके आदर और व्यवहार के आधार पर करती थी।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का साहित्य संबंधी परिचय बढ़ा, पर उसका सम्मान-बोध कवि की प्रतिष्ठा के बजाय लेखिका के प्रति व्यवहार से निर्धारित होता रहा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जानकारी बढ़ने और श्रद्धा न बढ़ने का भेद स्पष्ट करें तथा महादेवी के प्रति व्यवहार वाली कसौटी जरूर जोड़ें।